

वे-श

ध३

५३

ग नापर किंकनी लविच्छाई ॥ वनमाल सकुमाल के
दवनी कौस्तभ माणा पीताम्बर चटक नामैदामिनि
इति पाई ॥ वाज्रवेद श्रेयारि सुदरि नगत को अति च
मत्कार अरुण अथर मथर सर सरली वजाई ॥ कम
ल नयन विमल कोति केडल अति विव होत आनन्द
सो खाव मानो रसोरी मसकाई ॥ चंचर वारी अलक

जलक कीर्ये चंदन खौर और मोर मुकुट सीस धरें वनी
संदर नाई ॥ कहै भगवान हित राम राय प्रभु को निरा
दि श्रीगोपाल श्रीगोपाल रसना रटलाई ॥ रागिनी
बंगाली ताल ४ ॥ श्रीवल्लभ सजस सेतत नित
उद गाऊ ॥ इत्यस्याई ॥ मन क्रम वचन छिन एक
न विसयाऊ ॥ इत्यंत ॥ पुरुषोत्तम प्रवतार सहस्रत

वे.श.

४४

५५

फल फलित जगत वेदन श्री विटलेश उलगाऊ ॥ पर
सि पद कमल रज निरावि सौंदर्य निधि प्रेम पुलकित
कलष कोटिकनसाऊ ॥ श्रीगिरिधरन देवपति मान
मर्दन करन थोष रत्नक स्वावदसजस सनाऊ ॥ श्रीगो
विंद ग्वाल संगाय ले चलत वन निराविनैनति सिराऊ
श्रीवाल कलस सदा सहज बालक दसा कमल लोचन सो

हरषित रुचि वफाऊ ॥ भक्ति मारग सहज करन शु
ण रासि ब्रज मेगल श्रीगोकुल नाथही लडाऊ ॥ श्री
रघुनाथ धर्म धरधार सोभा सिंध रूप लहरिन इव हरि
वहाऊ ॥ पतित उदरन मसाराज श्री जडनाथ विशद
प्रेमज राय सिरसि परसाऊ ॥ श्री चन श्याम अभिराम
रूप वाषा सानी आसा लागि रसना वात्रि कर दाऊ ॥

वे.रा. वत्सर्भजदास परेव द्वार प्रणिपत करे सकल कुलको
४५ चरणामृत भोर उटि पाऊ ॥ रागिनी वेगाली ता
ल ३ ॥ भजि श्री विहल चरण सरोजे ॥ ३५ ॥
ई ॥ नाव माणि दीपिति दमिंत मनोजे ॥ ३६ ॥
इच्छसि यदि सतते सख सारे ॥ नजसित किमि
ति विषय धनभारे ॥ यदि वोच्छसि हरिभक्ति सर

त्ने ॥ ऊरुचपले शरणागतयत्ने ॥ प्राणसुद्धे
भनरदेहे ॥ परिहरसकल निगम सेदेहे ॥ मान
य हृदय मयो दित्त वचने ॥ तदप्या सिनोचेदति श
यपचने ॥ वक्तपदे भावय भवजलधि ॥ अतसमै
भवायित्त ववधि ॥ नाथ तवाह मिनी रणा रावे ॥
पूरय सन्नत मिममयिभावे ॥ तव शणा गणा कथि

वे.रा.

४६

५६

ना मृतगाथे ॥ प्राणीसिंदेदिशतव रचुनाथे ॥ ॥

रागिनी वेगाली नाल ३ ॥ रति सेशास वीर रस माने

अप्याई ॥ होहरि मूर शिरोसाणि अजहू नहिन सभार

सकल प्रेग नाते ॥ अंतया ॥ औरे वरन भये पलोवन

अपने अपने सहज विनाते ॥ मानहु भीरपरी औधन

की नाते भये क्रोध अति राते ॥ परि मल लव्य जहो

अलि वैदत उडि उडि उडि नहि सकत तहोते ॥ जन
मन मय सर वागे फाट्यो फोक होत सब बाहरि चा
ते ॥ वैदि जात अल सात उनीदे क्रम क्रम क्रम करि
उदत तहोते ॥ मन सरच्छा कदात्त नाट सलेकाफ
त नाहि बुभ्यो स्थिराते ॥ उवा मगात चूमत जो चा
यल शोभा अति भई सुभट कलाते ॥ सरदास स्वा

वे-रा- सी राणी जीते अब सकुचन थों होत मकाते ॥ रागिनी
४७
५७ वेगाली ताल ४ ॥ जागिये गोपाल लाल आनंद
निधि नेदलाल जसमति कहै बार बार भोर भयो प्यारे
रूप स्याई ॥ नयन कमल से विसाल प्रीति बाणिका म
गल वदन ललित चंदन नै ऊपर कोटि वारि उर ॥
अपेनरा ॥ उगत गुरुणा विगत सर्वरीस सेकि किरनि

हीन दीन दीप मलिन स्त्रीन इति समूह तारे ॥ मनहु
ज्ञान चन प्रकास वीते सब भव विलास आस आस ति
मिरतोप तरति तेज जारे ॥ बोलत विग सखर निकर
मधुकर कैवे प्रतीत सनहु परम प्राण जीवन धन मेरे
त्वम वारे ॥ मनो वेद वेदी मनि सून हेद मागथ गन वि
रद वदत जै जै जै जै त कैट भारे ॥ विग सित कमलावली

वे-रा

४८

५४

बल प्रफेद चतरी दगेजत कल प्रति न्यागि केज न्यारे ॥ म
नो विराग पाय सकल सोक रूप ग्रह विहाय प्रेम मत फि
रत भक्त गुनत गुण निहारे ॥ सनत बचन प्रिय रसाल
जायो प्रति सै दयाल भायो जे जाल विषल उख कदे ब
दारे ॥ न्यायो भक्त केद देद निरवि के मखार विद
सूरदास प्रति अनेद मेहे मद भारे ॥ ॥ ॥

राशिनी वेगाली ताल ३ षट्पदी ॥ मंगल रूप
यशोदानंद ॥ इत्यस्याई ॥ मंगल मङ्कट कान मणि
कुंडल मंगल तिलक विराजवेद ॥ इत्येतत् ॥ मंगल
भूषण सर्व अंग सोहृत्त मंगल मूरत आनंद कंद ॥ मंग
ल लङ्कट कोखमे चोपे मंगल मूरति वजावत मंद ॥
मंगल चाल मनोहर मंगल दरसन होत मित्यो उखदेद

वे.रा

४२

५१

मेरालं व्रज पति नाम सवन को मेराल जस गावत
प्रति छेद ॥ राशिनी वेगाली ताल ७ षट्परी
अब्दी नीकी लोनी साव भोरही दिवाये ॥ इत्य
स्याई ॥ मिशिके उनीटे नैन नोतरात सीटेवैन भाव
न होजीके मेरे सावही बजाये ॥ अयेतरा ॥ सक
ल साव करन त्रिविध नापहरत उनको विभिर वा

जौ नरतन साइये ॥ हारे हाँके ग्वालवाल करऊ क
लेव लाल मिशिये रोरी छोरी मोटी माखन सो खाइ
ये ॥ तनिक सो मेरो कन्हैया वारि फेरि सरी मेया वे
नी तो गुरे वानय गहरुन लाइये ॥ परमानंद जन
जननि मरित मन फुली फुली फुली उर अंगन स
माइये ॥ रागिनी बेगाली ताल २ छट्पदी ॥

वे. रा.

५-

50

जागिये गोपाल लाल जननी बलि जाई ॥ शय्याई ॥

उसी जात भयो प्रात रजनी को निमर गयो प्रगटे सब गवा

ल बाल मोहन कन्हारी ॥ शय्या ॥ उठो मेरे अनेद केद

गहन चंद मंद मंद प्रगटो प्रकाश भोव कमलति सख

दाई ॥ सिंगी सब अरत वेन तम विना न छुटे येन उठी

लाल नजो सज सदा वर गई ॥ सखतै पट हर कियो

जसदाको दरस दियो अरु दधि सब मोहि लियो विवि
धि रस सिद्धाई ॥ जेवन दोउ राम प्रणाम सकल मेगल
गण निधान प्रामें कछु जर रही सो मान दास पाई ॥

रागिनी वेगाली ताल १ षट्पदी ॥ प्रान नाथ प्रान
गयो जायो बलि जाऊ ॥ इत्यस्याई ॥ सौता केर गोफ
न सबैत में गुणाऊ ॥ इत्येनरा ॥ उगत सरज जोति

वे.रा

५१

भई कुलहिरीवनाऊं ॥ पाय बोधो वेचरु प्ररु वालि वो
सिखाऊं ॥ सुरदास मदन मोहन गुण तिहारै गाऊं ॥
हरषि निरावि ह्वविके उपर बलि बलि बलि जाऊं ॥
राशिनी वेगाली ताल १ षट्पदी ॥ रैन जागी
पिय संग देग भोनी ॥ शयस्थाई ॥ प्रफलित मख
केजनैन खेजरीट मीन मैन विप्ररि रहे चरन कच वद

न ओषकीनी ॥ इत्येतया ॥ आन्तर आलस जेभात प्र
ल कित प्रति पात खात मद माने तन मथिनरही सिथ
ल भई वेनी ॥ मोगातै दरे मत्ता हल प्रलक संग अरु
जि रही उरगत सत फति मानों केवु कितजि दीनी ॥
विक सत ज्यो चंपकली भेर भए भवन चली लह पदात
प्रेम चहा राजगति गते लीन्ही ॥ आरति को करत नाश

वे.ग. गिरधर सखि सख की रासि सख दाम स्वामिति शन गने
५२ न जान चीन्ही ॥ रासिनी देगाली ताल ॥ वटपदी
भोर प्रेग प्रेग शोभा श्याम के भली ॥ शय्याई ॥ म
नङ्ग विरासित विचित्र नील कमल की कली ॥ प्रिया
उरसि लग्न राग सरस झुरित झवि पराग पवन पर
सि मेदले संगेय कोचली ॥ करि प्रवेश जाण हार ह

रति जवति चित्तसार मरम वेधि समर वान काम ते व
ली ॥ पलटि वसन सावनिथान मत्त मधुप करत
गान सूरत समै सजस सनो अवन दे प्रली ॥ गोपा
ल दास मरन मोहन केज भटन बलिन रेग मदित अ
वनि भावनी समाति केरली ॥ रति आभोगः ॥
रागिनी बंगाली ताल ॥ ३ ॥ षट्पदी ॥

बे. रा.

५३

53

नाहि उरत नयना रतनारे ॥ श्याम्याई ॥ जान वेधक
समन विसाल पर सुंदर श्याम सिली मखनारे ॥ श्ये
नरा ॥ रही जयलक कुटिल कुंडल पर मोतन चितवत
चितै विसारे ॥ सिथिल मोह थन गहे मदन गुण रहे
कोकनद वान विखारे ॥ मंदेही आवत है ये लोचन
पलक आनर उचरत न उचारे ॥ सुरदास प्रभु मोई थो

कहो ऐसी की बलिता जासों रति रत हारे ॥ रागिनी वे
गाली ताल ३ घटपरी ॥ आवत लाल गोवर्द्धन थारी
इत्यस्याई ॥ अलस नयन सरस रस रंगित प्रिया प्रेम
नूतन अन्नहारी ॥ इत्येतदा ॥ विललित माल मरग
जी उर पर सरत समर की लगी परग ॥ वेवत श्या
म अथर रस गावत सरति भाव सख भैरव राग ॥ पल

बे-श-

५४

दि पोर पटनील सखी के रसमें जीलत मदन नशग ॥

हेदावन वीथिनि प्रदलोकत कलदास लोचन बड

भाग ॥ शशिनी बंगाली ताल ४ छटपदी ॥

पेसेही थरोरीदधि विना मयन किये देइज समति

नेऊ अपनीरई ॥ शय्याई ॥ अपनदे फूफि हारी

नैसी निशि अथिआरी पाउन भवन माऊ कहो थो

गई ॥ श्येतया ॥ कछुन जिय सहारि याहीनै आनर
आई लोनी के लालच जीय चट पदी भई ॥ दिना चारि
करो काज बाणो नेदज्ज को राज जोलों वझरिहो ल्याऊ
नई ॥ चतुर्भज दास रानी मेरी अति चोप जानी है प्रस
न्न माणि महिया आनिदई ॥ भोरही देखे प्रसीस वार
जिनिवि सोसीस निहारे गिरिधर कीहो वलि वलि गई-

बे-श ५५
रागिनी बंगाली ताल ४५ छंद ॥ श्रीनाथजी
को ध्यान मेरे निश दिनारी माई ॥ इत्यस्याई ॥ माथरी
सूरति सोहनी सूरति चित लियो चतुराई ॥ इत्येतया
लाल पागल टकि भाल चिबुक वेसर केटमाल करन
फूल मंद हास लोचन सखदाई ॥ मोर पेल सीस थरै
मोतिन के हार गारे वाज वेद पड़े चित कर मद्रिका सह

३ ॥ कुट्टवेदिका जेहरि नूपर विच्छिआ सदेस भेग भे
ग देखत उरआनेदन समाई ॥ सरली प्रथर थरे श्याम
हाळे वज्र जवति माह सप्त सरन मोन गान गोवर्धन राई
निरावि रूप अति अल्प छाके सर नर विमान बलभ
पद किकर दामोदर बलि जाई ॥ रागिनी बंगाली ना
ल पदपदी ॥ चर्चरी नाथ हाहा मोहि दरशदी

वे.रा

५६

56

जे ॥ **इत्यास्थाई** ॥ दीप जिति मन थरो सहज करुणा
करो विगार सागुन मोहि दास करि लीजे ॥ **इत्येतया** ॥
उखित छिन्न होत जिय वदन देखे विना रैन दिन तप
त चित कैसे जीजे ॥ कासो कहिये हिये राखिये को
न विधि रहत नही क्यों हे करि देह छीजे ॥ लेत न
उसास उर कैसे हो समाई नही सोच दग भरि न पीजे ॥

वदन लावति अमृत रसिक प्रीतम सखदयान विन
सकल तन कैसे भीजे ॥ रागिनी बेगाली ताल ॥
चर्चरी ॥ नेऊ बोली नाथ अमृत रसवैन ॥ ३२५
ई ॥ और न सहार परी करति हो हाइ नित चित न
लागत कहें नेऊ नही चैन ॥ दीन जन मन मनोर
प के श्रव करत और निहें लोक में देखियत हैं ॥

वे. रा. ५७
जे मिलन आशने लन सरव सभाव करि कहो कैसे हरि
मन रहे ऐन ॥ अरु वन रावरो है निहारे हाथ नाथ क
हो और समरथ है कोटेन ॥ रसिक पिया जिनिकरो क
दिन मन दोन पर परसिके नजन यह लषन तो चटेन
रागिनी बेगाली ताल ३ षट्पदी ॥ जै जै श्री
वल्लभ नेद ॥ इत्यस्याई ॥ कोटिकला बेदावन चेद ॥

इत्येतदा ॥ निराम विचारेन लहे पार ॥ सोदाकर प्रक्ता
के हार ॥ लीला करि गिरथरयो हाथ ॥ कीति स्वामि
श्री विहल नाथ ॥ रागिनी बंगाली नाल ३ षट्पदी
मदन गोपाल हमारे राम ॥ इत्यस्याई ॥ यत्नबवानच
दि विमलवेन करपीत वसन अरु ननचनश्याम ॥ इत्ये
तदा ॥ अपनो भज जिति जल निधि बोधो रासनचाप

वे.रा.

५८

५८

कोटिक काम ॥ दस सिर हति सब प्रसन्न सेचारे गोवर्ध
न थाक्यो कर वाम ॥ तव रचवर प्रब जडवर नागर ली
ला नित्य विमल वड नाम ॥ परमानंद प्रभ भेद रहित
हरि निज जन मिलि गावत गुण ग्राम ॥ रागिनी
बंगाली ताल ३ षट्पदी ॥ नीको मन ला
ग्यो गिरि धर गावै ॥ इति प्रस्थाई ॥ नतयेई नतये

ई भैरव गगनिलि सरलिका वजावे ॥ इत्येतदा ॥

नोचत नृप हृषभान्न नेदिनी औचर मतिरेग उपजा

वे ॥ नृपर कणित सखर मणि के कण सखी जूथ

सखरासि वजावे ॥ सरत देत मधुमन मधुप कलप

क ताली सवके मन भावे ॥ सरति सिंधु प्यारी पिय

पद रज कसदास न्योछावर पावे ॥ शशिनी वेगाली

वे.रा.
५५

ताल १ ॥ जागिये ब्रजराज केवर कमल फूले ॥
इत्याख्याई ॥ कुसुमद्वंद्व सकुचि भये भंगलता भूले ॥
इत्येतया ॥ तमचुर खग शेर सनड्ग वोलत वनराई ॥
रोभति गौदीर देन वल्लरा हित थाई ॥ विधु मल्ली
न रवि प्रकाश गावत ब्रजनारी ॥ सूरश्याम प्रा
त उदे प्रवृज करथारी ॥ इति आभोगः ॥ ॥

शशिनी बंगाली नाल ३ ॥ अष्टपदी ॥ भोरनि ऊँज
भवन्तै भासिति ॥ इत्यस्याई ॥ आवति है लटकति ग
ज गामिन ॥ इत्यंतग ॥ अतक संगेथ सगवगी कुटी०
निसिके उनीदे नैन वीर वरूही ॥ पलटित बसन रसन
मणि भूषण ॥ सोभा श्रेय श्रेय जित दूषण ॥ यण
निधान वृषभान इलारी ॥ दस गोपाल लाल जूकी प्यारी

वे.श.
६.

रागिनी वंगाली ताल ३ अष्टपदी ॥ अरुण नैन
राजत प्रथम जोरे ॥ इति प्रस्थाई ॥ अति सख सरत कि
ये ललना संग जात समद मन्मथ सर जोरे ॥ इत्येतदा
राति उनीदे अलसात मशाल राति गोलक चपल रहत
कछु थोरे ॥ मन डे कमल के कोसते प्रीतम छे फन
रहत क्षाणि रिष दल दोरे ॥ सजल कोप प्रतिमैं ज सो

भियत संगम छवि तारे पर छोरे ॥ मन्त्र भारते भेवर
मीन शिखर जात तरल चितवन चितचोरे ॥ वरतिन
जाइ कहो लो वरनों प्रेम जलद वे लावल ओरे ॥ स्वर
दास सो कोन प्रिया जिनि हरिके सकल प्रेम बल तोरे
रागिनी वेगाली ताल ॥ अष्टपदी ॥ समिरो
नर नागर वर सेंदर गोपाल लाल ॥ इति प्रस्थाई ॥

वे.रा^{६१} सबहो डख सिदि जेहें चित्तत लोचन विमाल धव-
शंभरा ॥ अलकन की अलकन लखि पलक
निगति भूलि जात भू विलास मेदहास रदनहास
खदन अति रमाल ॥ निंदत रवि के डल छवि गेड
सकर अलमलात पिछ्छ गच्छ कत वनेस रेड वि
मल बिंड भाल ॥ अंग अंग जित अनेग माथुरी तरेग

रंग विमल मदनमंद होत देखत लटकीली चाल ॥ २
नन रसन पीत वसन चारु हार वर शृंगार तलसी रवि
कसम खचित पीत उरनवीन माल ॥ व्रजनरस वे
सरीप बंदावन वर महीप श्री ब्रह्मभान माय पात्र सह
ज दीन जन दयाल ॥ रसिक रूप रूप रासि गुण निधा
न जान राय गद्य थर प्रभु जवनी जन मति मान समन

बे-रा मराल ॥ रागिनी बेगालीताल ३ अष्टपदी ॥
६२ दीनो दरस सपने में आइ ॥ इत्यर्थाइ ॥ छिन एक
साव उपज्यो मेरे मन गये कहें हरि विरह बढाइ ॥
इत्येतरा ॥ हाहा पाइ परतिहो तेरे क्योहे करि लावे
न बुलाइ ॥ अवन परत मोपेन रसो छिन विन भेटे
जीय अति प्रकलाइ ॥ यह उख कारि कहों सखि

तो विन मेरे तूही एक सदा ॥ कहा विलंब कर
नि जेवे को तो सों कहति साखि सो है खाइ ॥ वह
मूरति गडि रह्यो हिये में निकसति नही न और उपा
इ ॥ उठिये है सति विनती मेरी जस मति सरत सि
कन को राइ ॥ गगिनी वेगाली ताल ~~प्रपरी~~
चर्चरी ॥ हरिके विभावन को साखि जिनि दिखावे

वे.श. ६३ ६३
७३
इत्यस्याई ॥ जिति दिखावे नाथ जिति दिखावे ॥
जिनकी सेवाति किये होत उरमति हिये हरिके य
ए रूप जस नरत विसरावे ॥ इत्येतया ॥ जिनके
परसत सदा सरस मन विषय रस मगन कै जान
अनि पाप उपजावे ॥ करत ककुना उरैवैर मैं वि
त थरे सत सेवा परिहरे जवति वित लावे ॥ साथ

निंद करे ऊह भाषे सदा प्रीति राखे विषयी वचन
मनभावे ॥ अनेक साधन करि जाति राख्यो भाव
छिनमें जल अग्नि ज्यो बुझावे ॥ तेई जन विमल
जे करे और वात कसन सहान संसार थावे ॥ साधु
संगति रहे वचन हरि गुण कहे सतत निवहै रसि
क सोई भाव पावे ॥ रागिनी वंगाली ताल ३ ॥

बे. रा.

६४

६५

प्रष्टपदी ॥ प्रकटित सकल स्तुति आधार ॥ इति अ
स्थाई ॥ श्रीमद्वल्लभ राज कुमार ॥ इत्येतत् ॥ ये
य सदा पद प्रवृज सार ॥ अगणित गुण महिमाज्ज
प्रसार ॥ यस्मादिक द्वारे प्रतिहार ॥ अष्टि भक्ति कौ
प्रगीकार ॥ श्रीविह्वल गिरिधर अवतार ॥ नेद
दास कीनो वलिहार ॥ रागिनी वेंगाली ताल

प्रहपदी ॥ जै जै श्रीवल्लभ प्रभु श्री विठलेशनाथे ॥ ३
निप्रस्थारि ॥ निजजन पर करत कृपा थरत हाथ साथे
थुव ॥ उन्मत्तरा ॥ दोष सबै हरि करत भक्त भाव हिये
भरत काज सबे सरत सरा गावत गुण गाथे ॥ काहे
को देख दमत साथत करि मूरख जड विष मान आ
नेद तजि गहत को प्रणये ॥ रसिक चरण शरण स

बे-शा

६५

65

दा रहत हैं वर भारी जन अयो कविगो कुल पति भ

रत नाहि वाधे ॥ रागिनी बंगाली ताल ३ ॥

अष्टपदी ॥ अथ रासके कीर्तन ॥ राग रंगति मिल

वत नई ॥ इत्यस्याई ॥ नाचति ब्रजललना तनूये

ई ॥ इत्येतदा ॥ सार्वरित कटितट मणि मेखला ॥

अभिन ब्रजति चंचल करतला ॥ नृप संचित मोहि

नऊना । लेति उरगगति प्रभ दिन मूना ॥ कसदास
प्रभ देखेक वारी ॥ रिऊए लाल गोवर्द्धन थारी ॥
रागिनी बेगाली लाल ॐ प्रष्टपदी ॥ नाच वृष भान
सुता हेस सुता पुलिन मध्य हेस हेसिनी मयूर मेरली
वनी ॥ शयस्थाई ॥ गावन गोपाल लाल मिलवन
ऊपताल चाल लजित प्रति सत मदन कामिनी अनी-

वे-श-

६६

६६

पदिक लाल केव मात तरल तिलक ऊलक भाल अ
वाण फूल वरड कुल नाशिकामनी ॥ नील केवकी
सदेश चंपकली गलित केस सखित मणि दोम वो
म कटि सकाकुनी ॥ सरकत मणि बलय राव स
खित नूपुर सभाव जावक जत चरण नाखन चेदि
काथनी ॥ मेदहास भोरणास रासलास भव विलास

प्रलया लागलेत सचरायिकायनी ॥ कामश्रेयकि
नव बंधरीज रहे चरणा गारे साथ साथ करत फिरत
रायिकायनी ॥ भेटत गहिवाझ मूल उरज परस
भई फूल व्यास वचन सानकलरसिक जीवनी ॥
राशिनी बंगाली नाल ३ अष्टपदी ॥ जननि ज
गावति उदो कन्हाई ॥ शयस्याई ॥ प्रकट्यो तरनि

वे.श. ६७
किरनिगत च्छाई । श्रेयसा ॥ आवज्ज वेदवदन दि
खयाई ॥ बारबार जननी वलिजाई ॥ सखाहा
र सब तमहि बुलावत ॥ तम कारन हम था
य आवत ॥ सुरश्याम उदि दरशन दीन्हो ॥
माता देखि मरित मन कीन्हो ॥ इति आ।
भोगः ॥ ॥

रागिनी बंगाली ताल ३ जमनापद ॥ जमना
जमना नाम भजो ॥ इति प्रस्थाई ॥ हरि वनकरो
प्रशयन इनको और ऊपेय तजो ॥ इत्यंतरा ॥ देखें
सकल पदार्थ तमको औरको नाहि भजो ॥ वज्र
पतिकी अतिही प्यारी हैं ताते सकल भंगार सजो
समदाय ॥ रागिनी बंगाली ताल १ जमनापद

वे. रा.

६८

७४

प्रहृष्टियो नीलो वर पीताम्बर महियो ॥ इत्यस्याई
जेउल सोलरलट वेसर सो पीत पटहार ऊँ मैं बनमा
ल वहियो मैं वहियो ॥ इत्येतया ॥ हेसगाति प्रति
ह्वि श्रेया श्रेया रहीफवि उपमा विलोकि वेको
पटतर नहियो ॥ काम कलोल हूटे सेजह
के मख लटे सूर प्रभ विलसे कदम हूकी ह्वहियो

राशिनी वेगाली ताल ३ ॥ अरुण उदय आ
ये मेरे नंदलाल ॥ इत्यस्याई ॥ सिथलित अंगु
नीदे नयननि थरनी थरत उद्यमगी चाल ॥ इत्य
नरा ॥ प्रथरति अंजन पीक कपोलनि लटपटि
पाया जावकलिय भाल ॥ नापर सौह करत हो
ब्रजपति उरसि विराजत विनश्रामाल ॥ ॥

वे.रा.

६६

रागिनी वेगाली ताल ३ जसनापद ॥ शत

समय आवत विरिथारी ॥ इत्यर्थाई ॥ केजमह

लैत चले मोर उटि सेरा राजति वृषभान उलारी ॥

इत्यंतया ॥ चूमत नयन उनीटे निशिके निरखि

सरुचरी राइ बलिहारी ॥ पीक कपोलनिलये

उड़निके व्रजपति सिथिल गान अनि भारी ॥

राशिनी बेगाली ताल ॥५॥ जमनापद चर्चरी ॥

सुमिरि मन गोपाल लाल सेदर प्रति रूप जाल मि

दि है जे जाल सकल निराखत संग गोप बाल ॥ इत्य

स्थाय ॥ मोर मुकुट शीशधरे बल माल सुभग गारे

सब को मन हरे देवि के डल की ऊलक गाल ॥

इत्यंतरा ॥ आभूषन संग सोहे सोतिन के हार पोहे

बे-रा- ७०
कंटसरी मोहे दयागोपी निराखत निहाल ॥ स्त्रीत
स्वामी गोवर्द्धन थारी ऊवर नंद सुवन गाइनके पा
छे पाछे थरतेहैं लटकीली चाल ॥ रागिनी बे
गाली ताल जसनापद चर्वरी ॥ प्रातभया
जागो बलिमोहन साखदाई ॥ इत्यस्याई ॥ जन
नी कहै बारबार उटो प्रातके प्रथार मेरे उखहार

श्याम सुंदर कन्याई ॥ उन्नेतरा ॥ हृथ दही माखन
चूत मिसरी मेवा वदाम एकवोन भोति भोति विविध
रस मलाई ॥ स्नीत स्वामी गोवर्धन थारीलाल भोजन
करि खालन के संग वन गोचारन जाई ॥ राशिनी
बंगाली ताल ३ जमनापद ॥ भई भेद अचानक
आई ॥ इत्याख्याई ॥ हो अणने गृहने चली जमना

वे-रा

७१

वे उतते चले चारन गाइ ॥ इत्येतया ॥ निरावत रु
प दगोरी लागी उतको डगार भर चलो न जाइ ॥ की
त स्वामी गिरिधरन कृपा करि मोतन चितये मरि
मसकाइ ॥ रागिनी बंगाली ताल ३ जमना
पद ॥ उदङ्ग नेद कुमार भयो मितु सार जगावत
नेदानी ॥ इत्यस्याई ॥ जारी के जल वदन पखारी

सुन कहि कहि सारेग पानी ॥ इत्येतदा ॥ माखन
रोटी प्रह मधुमेवा जो भावे सो लीजे पानी ॥ हर
श्याम सावनि रावि जसोदा मतही मतहि सिहानी०
रागिनी वेगाली ताल १ जमनापद ॥ ओर भय
भोगी रस विलसि भये टाछे ॥ इति प्रस्थाई ॥ जावो
जामिनी जगाय भामिनी श्रेग सेग समाय स्वास सि

वे.रा.

७२

थल उरति उरत देत आलिगान गाछे ॥ इत्येतया ॥
सूमत रस मत मगन हृथेहू उग परत पगन छिन
छिन चित्त वौप वोजति मोज मनोजनि वाछे ॥ अ
तिरसमै रसिक राय शोभा वरनी नजाय वरु विहार
निदासिल राय प्रेम रेग रेगि काछे ॥ रागिनी वे
गाली ताल जमनापद ॥ चर्वरी आतही कि

शोर जोरि केज विलनी । इत्यस्याई ॥ अंग अंग ग
णत रंग गौर श्याम रूप रासि मदन केलि सवत सि
ध कूल जेलनी । अंतरा ॥ तरनि नंदनी सतीर
गावत पिय भेंगा कीर विगुण मरुत रोथरीर अमज
अंग जेलनी । वर विहार गनी सन प्रग दिवा जानी
विदल विपल बारनेक भजा केट मेलनी ॥ रासि

वे-रा नी बगाली ताल ३ जमनापद ॥ सोहत खेवर वारे
७३ वार ॥ इत्यादि ॥ अकफिर हे मजना हल निरवारत वा
७३ र ॥ इत्येतया ॥ इति मानी सेवा नेद नेद के छूटे
वेद केचु की टूटे हार ॥ निसिके जायो दोऊ नैना उ
रफिर हे चलति जोवन मदभार ॥ स्वरण्याम सेवा
यह सख देखत रीकै वारे वार ॥ इति आभोगः ॥

रागिनी बेगाली ताल २ षट्पदी जमनाजीके ॥
जैजै श्रीसुरजा कलिंद नंदनी ॥ इत्यस्याई ॥ गुल्म
लता तरु सवास केज ऊसस मोदमत येजत अलि
शुभरा अलित वास मेदनी ॥ इत्येतया ॥ हरिसमान
धर्म सील कांति सज्जल जलद नील कटिनिनेव भे
दत नित राति उतंगानी ॥ सिक्ता जन सक्ता फल के

वे-रा.

७४

कण जत भज तरेया कमलनि उपहार लेत पियाचर

ए वेदनी ॥ श्रीगोपेन्द्रगोपी सेवा अस जलकण सि

तरेया अति तरेयानी स्वरसिक रसस फेदनी ॥ कीत

स्वामी गिरिवरथर नेद नेदन आनेद जसने जन डरि

त हरन डखनिकेदनी ॥ रागिनी बंगाली ताल ४

षट्पदी जसनाजीके ॥ अति मेजल जल प्रवाह म

नोरमा सावावगाह नवनव शुतिराजत अति तरति
नेदनी ॥ इत्यस्याई ॥ श्यामवरत ऊलकरूप लाल
लहरि वर अन्तर्प सेवत सतत मनोज वायुमंदनी ॥
इत्यंतया ॥ ऊसदकेज वनविकास मंडित दिस दि
स सवास कूजित कलहेस कोक मधुर छंदनी ॥
प्रफुलित प्रविंद येज कोकिल सकसार येज सेवि

वे-रा.

७५

75

त श्रुतिभेदा प्रेज विविदवेदनी ॥ नारद शुकसनक

व्यास थावत मुनिकरत आस चारुत है श्रुतिनवास

सकल दुख निकेदनी । नाम लेत कटत पाप ऋषि

किन्नर मुनि कलाप करत जाप परमानेद आनेद

केदनी ॥ रागिनी बेगाली ताल ^{चंचल} षट्पदी.

आये लाल दुगमगन प्रात ॥ इत्यर्थाई ॥ भाल

महावर पीक कपोलनि अथरन मसि नयननि अरसा
त ॥ इत्येतया ॥ मोती माल लसे उर विनशुण सिथ
लित पाय सिथिल सबगात । वोलत वोल अटपटे मो
हन तापर सौंद करत नलजात । ओढे नील वसन
तम आये हैज चंद हृदि माऊलखात । सोवे वोल्
निवाहे व्रजपति माया कर आये परभात ॥ ॥

वे.रा.

७६

76

रागिनी बंगाली ताल १ छटपटी जमनाजीका
चूमन रत्ननारे नयन सकल निरा जाये ॥ इति अ
स्याई ॥ छटपटी सदेस पाग चल कनकी ऊलक
बीच पीकछाप जग कपोल अथरति मसि लाये ॥
अपेतरा ॥ विनयुण माल बनी बीच नावति रत्न
नी पलटि परे वसन पीट के कण सो दारो ॥ वाकव

मो चंदन वनमाल लरणो चंदनसो डगमगात चरण
थरत प्रिया प्रेम पागो ॥ वचन रचन कियो सोऊ वे
रा आये भोर सोऊ बलि बलिया वदन कमल शोभि
त अनुयागो ॥ जाय वसो वगही थाम बिलसे जहो
सकल नाम गोविंद प्रभु बलिहारी करजोरे मागो ॥
रागिनी बंगाली ताल ३ षट्पदी जसनाजीका ॥

वे. रा.

७७

७७

आये भोर उनीदे प्रणाम । इति प्रस्थाई । सकल निशा
जाये प्यारी सेराहारे हो रतिराग से प्राम । इत्येतया ॥
सिथलित पाग भाल पर जावक हिये विराजत वि
नशण माल ॥ कुंम कुम तिलक अलक पर से उर अ
भग पीक सोहत दोउ गाल ॥ केकन पीठ राउपो उर
नख च्छत जनु चन साऊ है जको वेद ॥ स्त्रीत स्वामी

गिरिधरनभले त्वम मोहि विजावत हो नेदनेद ॥

रागिनी वेगाली ताल ३ षट्पदी जसवाजीका ॥

कमल नयन हरिकरो कलेवा ॥ इति प्रस्थाई ॥ माख

नरोदी सद्य जम्पो दधि भोति भोति की मेवा । त्वारि

क दाख विरौजी किसमिस उजल गरी वदाम । सफ

री सेव खोहार सिंचारे जे खर दूजानाम "शुरु मेवा वज्र

वे.रा.

७८

७८

भोति भोतिके घटरसके मिष्टान ॥ सूरदास प्रभक
रत्न कलेऊ शीजे श्याम सुजान ॥ रागिनी बेंगाली
नाल ४ घटपदी जसनाजीके ॥ भोर भए निर
खत हरिको माख प्रभदित जसमनि हरषितनेद
इति प्रस्थाई ॥ दिन कर किरनि कमलजन विक
सित उर प्रति प्रति उपजन आनेद ॥ इति श्रेतया ॥

वदन उचारि जगावत जननी जगज्जमेरे आनंदकेद-
मानद मयि सर सिंधु फेन फटि द्यौ दिखई हरन
चंद ॥ जाकोई शशेष ब्रह्मादिक गावत नेति नेति
अति छंद ॥ सोई गोपाल सगोजल भीतर सरसो प्र
कटे परमानंद ॥ रागिनी बंगाली ताल ३ ॥
षट्पदी जसनाजीके ॥ तही जाइ जहोरैति हुते ॥

वे-रा

७५

79

शतिप्रस्थाई ॥ काहेको उराव करत नंद नंदन मिटे
न येक उर चिन्ह जते ॥ श्येतरा ॥ विन शन हारम
नो हर उर पर परम चतर हिय लाइ सते ॥ विष्टरी
प्रलक प्रटपटे भूषन लढे काम ऊच बीच डते ॥ द
शान दागान खोराव छवीली भासिनि भवन भाव
भयते ॥ सूरश्याम देविप्रति शोभा लोचन ललित

उनीदऊते ॥ रागिनीवेगालीताल ३ षट्पदी ॥
लालन आयेरीरैनिगवाई ॥ इतिअस्याई ॥ निसिभ
ईछीनबोले तमचुर खग ग्वालिन तवहि हेसी मस
काई ॥ इत्येतया ॥ अरुन किरिनिमख पैकज विस
सित मथप लियो सेदर रसजाई ॥ छेद मलीन भयो
दिन मणि ते कुसुद गये सबही कुंभिलाई ॥ चारि

बे-शा' जास जगान बीते मोहिं तम्ह विन मोको कछु न सो
होई ॥ स्तूयणाम या दस परस विन सब निश गई
मेरी नोट हे गई ॥ रागिनी वेगाली ताल ३ घट
पदी जमनाजीके ॥ जानत हो जैसे श्यानि भरे हों
इति प्रस्थाई ॥ काहे को उगाव करत मन मोहन सो
इपे कहो तम जहो फुरे हो ॥ अंत्य निशि जागत

निज भवनत भावन आलस वेत सब अकथरेहै ॥
वेदन तिलक मिल्यो कह वेदन काम ऊटिल ऊच
उर उथरेहै ॥ तम प्रति ऊसल किसोर नेदसत क
हो कौनके चित हरेहै ॥ औचिकही जिय जानि स
प्रभ सौहकरन को होत खरेहै ॥ रागिनी
बंगाली ताल ३ षट्पदी जमनाजीका ॥

बे-शा

२८

हाहा हो पिय बात कहौ ॥ अति प्रस्यार्इ ॥ आप क
हु जिय तरक गहत हो तो तम सौ हो मोन गहौ ॥

इत्येतया ॥ कहा चुक हमको पिय लागे रुसिरहे

हो काहेजू ॥ तबही ते वैसे हो दाढ़े मोतन को न

हि चारेजू ॥ अब हमरो अपराध हमोरो कृपा क

रो सब वो लोजू ॥ हरषणाम अब तजौ निदरई गुफौ

हृदयकी खोलौज ॥ रागिनी वेगाली ताल ३
बहुषही जमनाजीकी ॥ जाइतहो कहा सोचत है
इतिप्रस्थाई ॥ जासंगैरति विहातन जानी भोर भये
नेहि सोचत है ॥ श्येतया ॥ औरनिको छिन जय
वीततहै तब निहचीते नागर है ॥ चूमत नयन ज
सात वायही रतिसेगाम उजागरहै ॥ मैप्रब कहति

बं-रा
८२
८२
तुम्हारे हित की लाली के गह सोयर हो ॥ सुदृश्याम
वैसी प्रिय को है बहुरस वाली विन न लहो ॥ रागिनी
बंगाली ताल ३ षट्पदी जमनाजी के ॥ हमरी
पर पिय रुसे हो ॥ इति प्रथमा ॥ बोलत नही मूक
क्यों कैर है प्रति रंग हीन कछु से हो ॥ इति प्रेतरा ॥
तव निराखत औरहि हित वित विव किथों कहें तम

लूसेहो ॥ तवहसि वदन मिलत आजहि कहु और
भये निह रुसेहो ॥ उग मगात पग उत्ति परतहै
चित चंचल उत्तह सेहो ॥ मरदास प्रभु सोवि भाषि
गये प्रिय अंग अवलामुसेहो ॥ रागिनी बेगाली
ताल ४ जमनाके छटपटी ॥ श्यामासेग श्याम
नचत राससेग गणानि वचत शशि अखिउ मेडलह

वे-रा ८३ ८३
सि शरद जा मिनी ॥ इति प्रस्थाई ॥ तरति तरन कू
ल म्दल प्रहससि तरज प्रतीत विविध पवन ता
प वदन काम कामिनी ॥ इत्येतया चरण चलित
वक्त्र वलित ललित गान कलित नान मान सख नि
थान निरलेति भामिनी ॥ वर संगेथ रेग ताल स
णि म्ददेग विंगवाल लाल सथर श्रीथर राजराज

गामिनी । विजै पतिहि गति दिवाय लेत केवर के
हलाय श्याम चटा माऊ मनऊ डरति दामिनी ॥
नैन सै नमू विलास मंदहास साव निवास सति शु
नि सति बोलत जै व्यास स्वामिनी ॥ रागिनी वेया
ली नाल ३ षट्पदी जमनाजीका ॥ नैन श्या
म साव लटत है ॥ अंघ्रि अखाई यही बात मोको

वे.श. नहि भावे हमने कारू छूटत है ॥ इत्येतरा ॥ महा प्र

८४

४५ है निधि पार अचानक आप्रहि सवे बुरावत है ॥ अथ

ने है ताते वह करियत प्रणाम इनहि भरुहावत है ॥

छिन छिन प्रति सख सागर लूटत वरजे भौं है जानत

है ॥ सुरदास जी देत कछु एक कहौ कस्य अनुमान

तहै ॥ राशिनी वेगाली ताल ३ षट्पदी जमना के

दधिके मत वारे कान्ह लोलो प्यारे पलके ॥ शयप्रस्था
ई ॥ शीश मुकुट लटा खुरी और खुरी प्रलके ॥ शय
तया ॥ सरनर मुनि हार दाडे दरस कारन किलके-
नाशिका के मोती मोहै बीच लाल ललके ॥ करिणी
नोवर सरली कर प्रवण ऊँडल ऊलके ॥ सरदास
मदन मोहन दरस देहो भलके ॥ रागिनी बंगाली

वे. रा.

८५

85

ता ३ षट्पदी ॥ राम कृष्ण कर्हि निधि भोर इत्यस्यार्थे
वे अवयव ईश यन्त्र यथेवे व्रज जीवन मोक्ष चोर ॥

इत्येतदा ॥ वित्त के लब्ध चंदर सिंघासन भरत शाश्वत
न लक्ष्मण जोर ॥ उनके लज्जट पीतांबर गायन के
संग नंद किशोर ॥ उन सागर में सिंघात गई उन रा
षो गिर नाव की कोर ॥ नंद दास प्रभु सब तज
भजिये जैसे निरत चंद चकोर ॥ इति आभोगः ॥

रागिनी बेगाली ताल ३ अष्टपदी जमनाजीके ॥
श्रीजमना देवीकोन भलाई ॥ इतिअष्टपदी ॥ नाम
रूप गुणले हरिजूको मारी अयनी चाल चलाई ॥
श्रुतया ॥ उनवस देश कियो भानाको तमहि
परसि कोउ उतहि न जाई ॥ जेतन तजत तीर त
मरे ते तात किरति मै गैल लगाई ॥ मुक्ति वधुको

वे-रा

८६

86

करि हृतने प्रथमनिको ले आनि मिलार्इ ॥ आपन श्या
म आन उजल करि तात तपत आपसीतल तार्इ ॥ ज
ल को छल करि अतल अचन को यह सनिके कोउ को
पति आर्इ ॥ निश दिन पक्ष पात पतितन को तदपि गदा
थर प्रभु मन भाई ॥ रागिनी बेगाली ताल ३ ॥
जमना के अष्टपदी ॥ तही जाइ जही निमावसे ॥

इति प्रस्थाई ॥ जानति हो पिय चतर शिरोमणि नाग
र जागर गगारसे ॥ इत्येतया ॥ चूमत हो मानो पिय
उर गानीनव विलास अम सेजउसे ॥ श्याम उरस्थ
ल परनाख सोभित गगन उड़ज जन उड़लसे ॥ का
जल अथर प्रकट देखियत है नागवेलि रंग निपट
खसे ॥ लटपटि पाग महा बरके रंग मानिनि पगप

बे-शा. रसीसचसे ॥ विगलित केश सरदाजी माला पीदि
८७
चलयके चिन्हवसे ॥ सरदास प्रभु प्रिया वचन सु
नि नागर नगधरने केहसे ॥ राशिनी वेगाली ना
ल ३ प्रष्टपदी जसनाजीके ॥ क्यों सुउरतहों
प्रगटभये ॥ इति प्रस्थाई ॥ कहत है नयन निशाके
जागे मानो सरसिज प्रकृष्टानये ॥ इत्यंत ॥ जावक

भाल नागर सलोचन मसिरेखा अधरनि जो दये ॥
वलया पीठ निजेव चरण मणि विन शण केद हारव
नये ॥ भजनाटेक ग्रीव सोर चेदन विह कपोल दसन
प्रसये ॥ आलिंगन चेदन ऊच चर्चित मानो है शशि
उर उदये ॥ चरण सिथिल अरुचल उगमगी चूमत
वायल समरसये ॥ सरसाली कैसे मन माने सेदर

वे.रा.

८८

88

प्रणाम ऊटिल मयाये ॥ रागिनी बेगाली ताल ३
जमनाके अष्टपदी ॥ नेद हार एक जोगी प्रायो सी
गी नाद वजायो ॥ इति अस्याई ॥ शीश जटा शशिव
दन सोहायी अरुन नयन छवि छायो ॥ इत्येतदा ॥
शेवत खीजन कस सोवरो रहत नही झलरायो ॥
लियो उदाय गोद नेद राती हारे जाय दिखायो ॥

अलख अलख करलियो गोदमें चरन चूम उर लायो ॥
अवण लाग कछु मेत्र सुनायो हसि बालक किल का
यो ॥ विरजीवो सत महर निसरौ होजोगी सब पायो ॥
हर हर मचल्यो रावलो शेकर नाम वनायो ॥ ॥
रागिनी वेगाली नाल ३ जमनाजीके प्रहृषदी ॥
राम चरन अभिराम काम प्रति तीरथ राज विराजे ॥

वे-श-
८५

89

इति प्रस्थाई ॥ शोकर हृदय भक्ति भूतल वर प्रेम प्रच्छ
य वट छाजे ॥ इत्येतया ॥ श्याम वरन पद पीठ अरुण
नलल सत विसदनाव श्रेणी ॥ मनोरवि सता सार
दा सर सदि मिलि वलि ललित विवेणी ॥ अंकुश कलि
स कमल ध्वज रेखा भेवर नरेया विलासा ॥ मजन स
र मजन मनि वरजन सरित मनोहर वासा ॥ वित वि

राग तप जोग जोग व्रत विन तन तीरथ त्यागे ॥ सो स

व सलभ दास तलसी प्रभ पद प्रयोग अनुरागे ॥

रागिनी वेगाली ताल ८ ॥ श्री कृष्ण नाम रस नार

द सोई थन कलि में । शयखाई । जाके पद पे कज की रे

एकी वलि में । शयतया । सोई स्रक्त सोई प्रनीत सो

ईकल वेता । जाके निश दिनारहे कृष्ण नाम चिन्ता ॥

वे.रा. ३५०
१०
जोग जग नीरय बत कृष्ण नाम माहीं ॥ विना
कृष्ण नाम कलि उधार और नाहीं ॥ सब सबन
को सार कृष्ण कवहू न विसरिये ॥ कृष्ण नाम
लैलै भव सागर को तरिये ॥ श्री गोवर्द्धन थर
न प्रभु परम मेगल कारी ॥ उधरे जन हर दा
स नाकी वलि हारी ॥ इति श्री भोगः ॥ ॥

राशिनी बंगाली जाल ४ जसनाकेषद ॥ जाशि
ये गोपाल लाल प्रगट भयो हेसमाल मिटै गयो ग्रथ
कार उद्यो जननि सखिदेवार्थ ॥ इति प्रस्थाई ॥ सक
लित भै कमल जाल कुसद हृदवन विशाल सेटकु
जे जाल विविध नाप नतन सार्थ ॥ इत्येतरा ॥ दाफे
सब सखा हार कहत नेद के कुमार देखत है बार बार

वे-रा-

२१

११

प्राइये कन्दाई ॥ गौयति भई वडी वार भरि भरि पय
यन निभार वच्छ रागमाकर प्रकार तम विन जड
राई ॥ नाते यह अटक परी दीहन काज सौ हेकारी
उदि प्रावड कौ न हरी बोलत बल भाई ॥ सखते प
दऊद किआरि चेद वदन देउआरि नसमति बलिहा
रि वारि लोचन सखदाई ॥ येन उहन बले थाय रोहि

एगी कौ लई बुलाय दोहनी मोहिंदे मगाई तवही
लै आई ॥ वच्छा दियो यन लगाय डहत वैदिके
वन्हाय हेसत नेदयाय तहो माना दोड आई ॥ दोह
नी कहे हथ थार सिखवत नेद बार बार वरच्छवि
नहि बार पार नेद्वर वथाई ॥ तव हलथर कस्यो
सुनाय येन वन चली लिवाय मेवा लीने मगाय

वे.रा.

५२

१२

विविध भस्म मिटाई ॥ जैवत बलराम श्याम सेतन के
सखिद थाम येन काज नहि विप्राम जसदा जल ल्याई.
श्याम राम सखि पखारि ग्वाल वाल लये हेकारि ज
सना तट मन विचारि गाइन हेकराई ॥ भेंगवेण
नाद करत सुरली सुरमधुर धरत ब्रजोगान मन हर
त ग्वाल गावत स्थराई ॥ हेंदावन तरत जाय येन

चरति तस्या अथाय श्याम हरष पाय निरति सरज
वलिजाई ॥ रागिनी बंगाली ताल ३ जमुना
केपद ॥ जै गोविंद मायो सकेद हरि ॥ इति प्रस्थाई
कृपा सिंधु कल्यान केसरी ॥ अंततया ॥ कृपति
पाल केशव कमलापति । कस कमल लोचन अग
तिनगति । समवेद एजीव नयन वर ॥ शरणा सा

वे.ग. ५ श्रीपति सारंगधर । वनमाली वामन विह्वल व
२३ ल । वासुदेववासी व्रजभूतल । खर दूषण विशि
९३ श सिर खिडन । चरण चिन्ह देउक भवमेडन । वकी
दवन वक वदन विदारन । वरुण विषाद नेदनिस्ला
रन । ऋषि माख शान ताउका तारक । वन वसिना
न वचन प्रति पालक । गोकुल पति गिरिधर गुण

सागर । गोपीरवन रासयति नागर । खुपति प्रवत्
पिता कवि भजन । जग हित जनक सत्ता मनरेजन ।
काली दसन के सिकर पातन । अच अरिष्ट येन क
प्रव चातन । करुणा मय कपि कुल हितकारी ॥
बालि विशेष कपट म्हा हारी । अम गोप कन्या व
न पूरन । हिज नारी दरसन डख चूरन । रावण के

वे-श भकरण सिर छेदन । तरवर सातपक सरभेदन ॥
२४ शोखचूड चाणूर सेचारन ॥ शक्र कहै मेरी रक्तका
१५ न । उत्तर कृपा गीथ कृतकारी ॥ दरसन देसेवरी उ
हारी ॥ जेपदसदा शोभ हितकारी ॥ जेपद परसि स
रसरीगारी । जेपदरमाहदै नहि दारी ॥ जिति पदने
तिऊ भवन तियारी ॥ जेपद वंद्यवनहि विहारी ॥

जेपद पोउव गदह पशु थारी ॥ जिति पदशकटा स
र सेचारी ॥ जेपद अहिफन फन प्रतिथारी ॥ जेप
द भक्तन के सावकारी ॥ जिति पदरज गौनस वि
यतारी ॥ हरदास सरजावत वेद पद ॥ करझ क
ण अपने जन पर सद ॥ ॥ राशिनी बेगाली ता
ल १ जमनापद ॥ कस नाम भावे मोहि कस

वे-रा

५५

१५

नाम भावै । बलिहारी ताकी ज्यो कस नाम गावे-
वसुधा को सार कस मेरे मन के आधार । कस अव
ण मंगल रूप कस सब विचार । मंत्रन को मूल
कस हरन सकल बिल कस ब्रज समुद्र को वार ।
कस शिव को आधार मेरे रसना को भाग कस था
न थार । मन को सहारा कस रसना तेजन को तेज

कलस सब मंत्रन सुवार । यह राम राय कहत कलस
नाही जपत भगवान कलस वारे वार । हरे हरे हरे
कलस कलस कलस राम राम राम । नारायण नाराय
ण वासुदेव वासुदेव गिरिवरधर गिरिवरधर श्या
म श्याम । दीन वेष दीन वेष वैकुण्ठधाम ॥ होत
प्रात वरु प्रतीत लेत हरिको नाम । रामो हर रामो

वे-रा-

२६

१६

दर वक्रणानि नरहरि हरि नरहरि हरि सर विप्रमरा
री ॥ मधुसूदन मधुसूदन सोवरो वनवारी ॥ जस
ना के नीरे नीरे बन्दावन थाम । सूर श्याम रदन र
हन राधावर नाम । भोर उठ समरन करो होय सब
ही काम । बेसी बट जसना तट से दर चत श्याम ॥
रागिनी बेयाली ताल १ जसनापद ॥ वासरी

वजाई आज रेग सौ सगरी ॥ इतिअस्थाई ॥ शिवस
माधि भूलि गई सनि मन की तारी ॥ इत्येतया ॥
भेद भनत ब्रह्मा भूले भूले ब्रह्मवारी ॥ सनतही
आनंद भयो लगी है करारी ॥ रेभा सब ताल बुकी
भूली नृत्य कारी ॥ जसना जल उलट वयो सथ
ना सम्हारी ॥ श्रीवेदावन वेसी कजी तीन लोक

वे.श. १७ प्यारी । खाल वाल मगन भये ब्रज की सब नारी ॥

संदर श्याम मोहनी मुरति नटवर वप्रथारी ॥

१७ मूर किशोर मदन मोहन चरणों बलिहारी ॥

रागिनी बेगाली ताल ३ जमनापद ॥ देखो

री यह कैसा बालक शनि यशो मति जाया है ॥

शनि प्रस्यार्थ ॥ संदर वरन कमल दल लोचन दे

खित चंद वजाया है । श्योतरा । शरण बल अलखि
विनाशी प्रगट नंद सर आया है । मोर मुख पीतोर
मोह केसर तिलक लगाया है । कानन कुंडल गल
वित्त माला कोटि भान खवि छाया है । शोख क
दा पम विराजे वन भज रूप बनाया है । परमेश्वर
रुषो नम स्वामी जस मति सत कह लाया है । मख

वे. रा.

५८

५४

कच्छ वासाह औ वामनराम रूप दरसायाहै । विभक्ता
विप्रशते नरहरि वप्रजन प्रह्लाद कुशयाहै । परसर
मबुध निःकलंक होय भुवका भार मितयाहै ॥ का
ली मर्दन केश निकंदन गोपी नाथ कहायाहै । मधुसू
दन मायो मुकुंद प्रभु भक्त वच्छल पद पायाहै । रामो
दर गिरधर गोपाल हरि विभवत पति मन भायाहै ॥

शिव सन काटिक प्ररु ब्रह्मादिक शेष सरस सख गा
या है । सरनर मुनि के ध्यानन आवत अदभत जाकी
साया है । सोपरे ब्रह्म प्रगट होय वज्रमै लूट लूट दधि
लाया है । परमानंद कल सन मोहन वरन कमल चि
त लाया है ॥ शशिनी बेगाली ताल १ जमनापद-
मै जोगी जस पारे वावांमै जोगी जस गाया । तेरे सन

वे-रा के दरसन कारनमें काशीमें थाया । इति प्रस्थाई । परे
५५ वसु शरण परुषोत्तम सकल लोक जा माया ॥ अत
५१ त्व तिरंजन देवन कारन सकल लोक फिर आया ॥
थन तेरो भावा जसोदा रानी जिन पेसा सत जाया ॥
गुनन वडे छोटे मत भूलो अत त्व रूप थर आया । जो
भावे सो लीज्यो रावल करो आपनी दया । देऊ अशी

शमेरे बालक को अविचल बाँधे काया । नामै लेहें पा
ट पटेवर नामै केचन माया । सब देखू तेरे बालक
को यह मेरे शुरूने लाया । कर जोरे चितवे नंदरानी
सुन जो बान कै राया । सब देखन नहि देखे राव
ल बालक जात उराया । काला पीला गोर रूप है वा
चेवर ओढ़ाया । कड़े शयन की दृष्टि लगे कड़े बाल

वे.श क जान दिलाया ॥ जाकी दृष्टि सकल जग ऊपर सो
१००
क्यों जान दिलाया ॥ तीन लोक का साहब मेरा तेरे भव
न छिपाया ॥ कस लाल को ल्यारै जसदा कर प्रवल सु
ख दिलाया ॥ कर पसार चरन न रज लीनी सीरी नाद व
जाया ॥ अलख अलख कर पाय कुण्ड है हेम बाल क कि
लकाया । पोट वेर पर कमी करके प्रति आनंद व दिलाया-

हरीकी लीला हरमन अटक्यो चित नही चलत चलाया-
अविल ब्रह्मा उनके नायक कहिये नेद चरहि प्रगटया-
इंद्र वेद सूरज सारदसनकादिक पारनपाया ॥ लाग
अवन मंत्रदि जो सुनाया हेसि बालक सुसकाया ॥
कौन देशके जोगी हो तम कौन नाम धरवाया ॥ क
हो वास यह कहत जसोदा सुन जोगिनके शया ॥

वे.रा.

१०१

तमही ब्रह्मा तमही विष्णु तमही ईश कहाया । त

म विष्णुभरतम जग पालक तमही करत सहाया-

१०/ हार श्याम करे सुनो जसोदा शेकर नाम बताया ॥

इति आभोगः ॥

रागिनी बेगाली नाल ३ ॥ अविगत आदि अनेन
अनूपम अलष पुरुष अविनासी ॥ हरण बल प्रगट
पुरुषोत्तम तित तिज लोक विलासी ॥ जहे हेदावन आ
दि अजर जहे केजलता विस्तार ॥ तहे विहरत प्रिय प्रीत
म दोऊ निगम भेग शेजार ॥ २ ॥ रत्न जटित कालिंदी
के तट प्रति प्रतीत जह नीर ॥ सारस हेम चकोर मोर

बं-श

१०२

खग कुजत कोकिल कीर ३ जहो गोवर्धन परवत स
निसे सचन केदरा सार ॥ गोपिन मेरुल मध्य विराजत
निशि दिन करत विहार ४ खिलत खिलत चित्तै आ
ई सहि करत विहार ॥ अपने आप करि प्रगट कि
योहै हरी पुरुष अवतार ५ माया कियो ह्योभ बद्ध वि
धि करि काल पुरुष के प्रेरा ॥ राजस तामस सान्त्विक

विशुद्ध प्रकृति पुरुष को सेवा ६ कीर्तित तत्त्व प्रगाढ तेही
स्त्रिंशत् सर्वैः अष्ट अरु वीश ॥ तिनके नाम कहत कवि
सूरजी निर्गुण सब के ईश ७ दृष्टिबी अप तेज वासु
नभसेजा शब्द परस अरु गोथ ॥ रस और रूप और म
नवधि चित्त अहेकार मति अथ ८ पान अपान व्यान
उद्दान और कहीयत प्राण समान ॥ तत्त्व कथन जय

वे. रा.

१०३

103

उन देवदत्त और पौंड्रक शोख सुमान ५ राजस तामस
सात्विक तीनों जीव ब्रह्म सख थाम । अर्थात् सत्त य
ह वासोयत सो कवि सरजी नाम १० नाभी कमल ना
शयण की सो वेद गरभ अवतार ॥ नाभी कमल में व
ऊत ही भटको तऊत ययोपार ११ तब आजा भई य
हरि की नभ करो परम तप प्राण ॥ तब ब्रह्मा तप कि

यो वर्षसत हरभये सब पाप १२ तव दर्शन दीनों करुणा
कर परम थाम निज लोक ॥ ताको दर्शन देखि भयो प्र
जस भवातनि सोक १३ जहा आदि निज लोक मरा निधि
रमा सहस संजत ॥ ओ दोलन कूलत करुणा निधिरमा
सखद प्रतिहत १४ प्रसूति करि विविधि नाना करि
परम प्ररुष आनेद ॥ जैजैजै कति गीत गायकै पढत

बे-शा- १४ है नाना छंद १५ अज्ञा करी नाथ वत्तरानन करौ स्मृति
विस्तार ॥ होरी खेलत की विधि नीकी रचना रचो अण
१०५ र १६ चौदह लोक करौ नाना विधि रचि वैकुण्ठ पाताल ॥
नाना रचना रचो विधाता होरी खेल रसाल १७ ॥ दशा
हौ पुत्र भये ब्रह्मा के जिन सेव्यो सेसार ॥ स्वयं भूमन
प्रगट नवकीर्ति अरु सत रूपानार १८ भवकी रक्षा कर

नज कारन थरिवार प्रवतार ॥ पाछै कपिल रूप ह
रि थारयों कीनों सोख विचार १५ दीनो ज्ञान आप मा
ता को कीनों भवति स्तार ॥ आदो लोक पालन व की
ये अपने अपने अधिकार २० ते अगिनिज समरुत वरु
न और सूरज चंदयह नाम ॥ सत्य कवेर पत्तपति कहि
यत जहो शेकर को थाम २१ सत्य लोक जन लोक लोक

वे.श

१५

105

नम ओर महर निजलोक ॥ जहराजत अवरज महर
निधि निशिदिन रहन असोक २२ जननी आजापाय
चले वनपाच वरष सज्जमार ॥ ताको आप कृपाहरि
कीनीथरि आये अवतार २३ पाछेष्टुको रूपहरि
लीन्हो नानारस डहिकाफै ॥ तापर रचना रचीविधा
ता वज्रविधि जनननवाफै २४ रचिनौखेउ दीप सानो

मिलि कीनो होरि समाज ॥ वन उपवन परवन वज्र
फूले सबै वसंत को साज २५ दानव देव लोगे आपसमें
कीन्हो यह प्रकार ॥ विविध शस्त्र कूटत पिचकारी
चलत रुथिर की धार २६ दीनै मार असुर हरिनै तब दे
वन दीनों राज ॥ एकन को फगवा ईशसन एक पता
ल की साज २७ विद्याधर गोधर्व अफरा गान करत सब

बे-रा.

१०६

106

दाफे ॥ चारन सिद्धपद्धत विरदा वल लैफगवाहाव

बाफे २८ चंद्रलोक दीनों शशिको तव फगवा मैहरि

आप ॥ सवन चक्रको राजा दीनों शशिमेंदल मैछाप

२५ मंगल बुद्ध अक्र अरु शानि अरु राहु केत ग्रह जाति-

रवि अरु शशि सब होतको फगवा दीनों चतुरस्रजाति

३० अतल वितल अरु सतल तलातल और मसातल जान-

पाताल और सातल मिल सातो भवन प्रमान ३१ संकर
वनको धामपर मरुचित हो राजत निजवीर ॥ शेषनाग
ताकेतर हरम वसत मही धनधीर ३२ ईलावर्त और
किमुषरुषा ऊरु और हरिवर्ष केतमाल ॥ हिरनमें र
मनक भद्रासन भरतखंड सावपाल ३३ सातो दीप
कहे शुक्लनिने सोई कहत अव सूर । जेवल्लकोच

वे.रा. साय कह प्ररु ऊश प्रशकर भर पूर ३४ अपनै अपनै स्थान
१०७ पर तव फयवा दियो बुकाय ॥ जब जब हरि मायातै दान
व प्रगट भये हे प्राप ३५ तव तव थरि अवतार कसने
कोनो असुर संचार ॥ सो चौबीस रूप निज कहियत
वरनन करत विचार ३६ प्रथम किये स्वाये भ मन्त्रप
प्रजप्राप्ता यह दीनी ॥ भूपर जाय राजतम करिहो ह

ॐ विस्तार यहकीनी ३१ स्त्रायें भूमि मनु अरु सतरूपा न
रत भूमि पर आयें ॥ जलमें मगन भये भवदेवै फिर
अजयै फिर आयें ३८ अजसो आय कही सबही विधि भु
वइव देखियत नाही ॥ तब अति ध्यान कियो श्रीपति
को केशव भये सहारै ३५ आई लीक नाकतै अगटे मू
कर अति लघुरूप ॥ देखत राजसे होय गये हैं कीन्हों सह

वे. रा.

१-८

तत्स्वरूप ५- जैजै करत सकल सरनर सति जलमै कि
यो प्रवेश ॥ जायपताल वाट गहिलीनी थरनी रमा न

१०८
वेश ४१ तेभव कमल कसम की नाई चलै मन्त्र गजरा

ज ॥ ककुडर नास्ति जियमैं उरपत प्रति आनेद समा

ज ४२ जोग साथ सनकादिक चारी गये हरिके निजलो

क ॥ कीन्है कोय मनेजव कीन्है दियो आप प्रति सोक ४३

जै प्रह विजय प्रसर योनिन को भये तीन अवतार ॥

तिनमें प्रथम लियो कश्यप गृहदित की कोणि मजार

४४ प्रथम भयो हरनात्त महाबल जिन जीने लोक पा

ल ॥ नारद सोप गयो शूकर पै देखो रूप विकराल

४५ सहस्रवरष लो जल में जूँ कियो दन्त संहार

पाँव आय भूमि को थापी कियो यज्ञ विस्तार ॥ ४६

वे-श-
१-५

109

स्वायेभू सतरूपा तनयः कहियत तीन प्रमान ॥ अऊ
नी देवऊनी और परसूनी चत्वर सजान ४० परसूनी दई
दत्त प्रजापति तिन की सती सयान ॥ सोदीनी महादे
व देवको अति आनन्द सजान ४८ तज्यो देह अभिमा
न पायकै बद्धर दत्त गृह जाई ॥ पाति वत धर्म जव जा
न्यो बद्धो रुद्र विहाई ॥ ४५ ॥ आऊनी दई रुचि प्रजा

पति भये यज्ञ अवतार ॥ इंद्रासन बैठे सख विलसत हर
किये भवभार ५० देवद्वती कर्दमको दीनी तिन कीन्हो
नय भारी ॥ विंड सरोवर आये माथव किये गरुड असवा
री ५१ दियो वरदान सहि करिवेको अस्तित्व करी प्रसा
न ॥ मेरो प्रेम अवतार होयगो कहि भये अंतरधान ५२
पाछै ऋषि निज नयमन लायो कीनो प्रगट विमान ॥

वे. रा. ११- तामें वैद सकल जग देख्यो कमानों सखदान ॥ ५३

पाछै कपिल रूप हरि प्रगटे दयान करि सति गाय ॥

कीनों त्याग गये वनको तब ब्रह्म परम पद पाय ५४

पाछै विविध ज्ञान जननी को दीनों कपिल दृष्टाय ॥

सोख्य जोग अरु ज्ञान भक्त दृष्ट वरनी विविध वनाय ५५

जलको रूप तरनै कै गइ वह हरिकै रूप समाय ॥

चले मगान कै ब्रह्म ध्यान कर योग सागर द्वाय ५६
अजहंलो राजतनीरधि कै तट करत सोख विस्तार ॥
सोख्यायन से बद्धत महा सनि सेवन चरत सचार ५७
अरे पुत्र भये ब्रह्माके तिन कीन्ही नप जाय ॥ आये ती
न देवता के छिग ब्रह्मा शिव हरि राय ५८ तब उन सो
ग्यो सत नमहौ से तीनों प्रगटे आय ॥ अज शशि अंस

वे-श- रुद्र उरवासा दत्तात्रेय हरि राय ५५ अनसया के गर्भ प्र
॥ मट कै कियो जोग आयाथि ॥ यम अरु नेम प्रमान प्र
॥ न्याहार धारन ध्यान समाधि ६ आसन कसब सिद्ध जो
ग कर प्रगट कला जगदीस ॥ दीनौ भोग सहस नृप
को वड करुना निथ जगवीस ६१ कीनै गुरु चौबीस
सीष लै यडको दीनो ज्ञान ॥ पाते जलसै मनि पद से

वत करत सदा प्रजथ्यान ६२ जब सृष्टि पर कृपा को
नी ज्ञान कला विलार ॥ सनक सनेदन और सनातन
वागे सनत कुमार ६३ उनको कसो सृष्टि नाना विध रच
ना करो वनाय ॥ उन नहि मायो तब चतुरातन एवी
ऊँ जोय उपाय ६४ शेकर प्रगट भये भज दीनै करौ
सृष्टि निर्माण ॥ भूत प्रेत वैताल रचै बहूँ दौरे विधि को

वे.श.

११२

खान ६५ सुरनकरों कस्यो चतुरानन सहि महा उख
दैन ॥ तव शेकर तपस्या कोतिकसै चितै कमल द
लनैन ६६ सुरत त्रियाज भई थरम की तिनके हरि
प्रवतार ॥ नाशयण भये प्रगट वसु तिन मैसो भवभा
र ६७ सहसकवच एक असुर सेहारेव वहरि कियो न
प भारी ॥ सोच परेव सरपति को तव उन पटई अण

रा नारी ६८ वदत भोति उन कियो परम कल नयमे
उनके काज ॥ ककु नही चली ब्रह्मा नायायण सख
समाधिनिय राज ६९ एक उरवसी हृदय उपजाइ दई
शक्रको नाय ॥ ताको देख देख जीवन है अजड़े उइ स
खाय ७० खाये भूके इतिय पुत्रकृतान पादमतिधीर
तिनके भुव बालक जो जाये और उत्तम गंभीर ॥ ७१ ॥

बे-श-

११३

११३

नृपके पास गये गोरीमै वैदतको सकुमार ॥ तब ल
जु मान कस्यो तब वैदे जब मेरे सुवतार ॥ १२ सुन कह
वचन गये मानाये तब उन ज्ञान दफाये ॥ हरिकी
भक्तिकरीं सखनीकै जो चाही सख पायो ॥ १३ पोच
वरष के निवास चले तब मथुवन पड़ेचे आय ॥ वि
च नारद सुनि तत्त्व वतायो जपै मंत्र चित लाय ॥ १४

कछु दिन पत्र भक्ष करि वीने कछु दिन लीने पानी ॥

कछु दिन पवन कियो अन प्रसन रोको स्वास यह जानी

५५ सरुन तप जव कियो राज सत तव कोणो सरलोक ॥

गहि गहि हरिसो सब भाषो हर करे सब शोक ॥ ५६

तव हरि कसो कोऊ जिन उरपो अवहि तरत मै जैहो-

बालक भव वन करत गहन तप ताहि तरत फल दे

वे.रा. हो ७७ इतनी कहत गरुड पर चण्डिकै तरतहि मथव
११४ न आये ॥ केवु कपोल परम बालक कै बानी प्रगट क
११५ राये ७८ अस्तनिकरी वज्रत भव सब विध सन प्रसन्न
भय आप ॥ दिये राज म्हेमंडल को सब विध थिर करि
आप ७९ हरि वैकुण्ठ सिधारे सुन भव आये प्रपने थाम-
कीनो राज नीसपट वरषन कीन्हें भक्तन काम ८० ॥

यत्त प्रवत्त वाफै भव सेडल तित्त सारयो निज भ्रात ॥

तित्तके काज अंश हरि प्रगटे भुव जगत विख्यात ८१

वदत वरषलौ राज कियो भव फिर प्राये निज लोक ॥

सबके ऊपर सदा विराजत भुव सदा नीसोक ८२ सनका

दिक प्रखियो वनरा नन ब्रह्मजीवकों बीच ॥ प्रगट हे

स वष थरयो जगत गरज्यो पैनीर समीच ८३ यह भव

वे-रा मेउल को रसकाजो भोति भोति निज सय ॥

११५

यदि एक रूप कियो जग आनंद अखिल लोक कै ना

य २४ प्रिय वत वेश थरेव हरि निज वष सख भ देव य

ह नाम ॥ कीन्है काज सकल भक्तन को प्रेग प्रेग अ

भिराम २५ कीनों गर्व महा मचवा नै वरषा वरषो ना

ह ॥ नव हरि आप मेय है वरषे करी परम सख खार

८६ ज्ञान उपदेश कियो पुत्रनको ब्रह्मा वर्त मजार-
पाछे करि सत्पास जगानमै विचरे परम उदार ८७
प्रायो सिद्ध भई सत्पास जब करीन ऐसी कार ॥ जै
जै जै श्रीऋषभ देव मनि पर ब्रह्म अवतार ॥ ८८
ब्रह्म सभामै कियो यज्ञ जब करन वेद उचार ॥
प्रगट भये हयग्रीव महानिधि पर ब्रह्म अवतार ८९

वे.श.

११६

११७

चार वेद ले गयो सोखा सर जलमै रह्यो क्षिणाय ॥ थ
वि हय श्रीव रूप हरि मारेव लीने वेद कुडाय ॥ सत्य
व्रत राजा रघुवंसी प्रथम भये मनु वंस ॥ कीनो तप
वद्ध भोति परम रुच प्रगट भये हरि प्रेम ॥ थरि
लख रूप मीन कौ मोहन आये उनके पानि ॥ तब
उन जलमै शरि दिये फिर तब बोले हरि बानि ॥ १२

जलके बीच शरिजिनमो को वडे मच्छ डर लागे ॥ य

ह कहि ब्रह्म रूप हरि थारेव सत्य व्रत के भाग ॥ ४३

सत वेदिवस होयगी परलय आवेगी एक नाव ॥ ता

मे बैठ सत हिज प्रह तम करो भजन ममभाव ॥ ४४ ॥

तनो कहि हरि न्य देवत हो भये जो घेतर ध्यान ॥

साते दिवस भयो जब परलय तब कीन्हो न्य ज्ञान ॥ ४५

बं. रा.

११७

सबहि अन्नको बीज लियो नृप और लिये हिज साय ॥

वैद्यो नाव ध्यान हरिको करि दर्शन दीनों नाथ ५६

बासकि नाग आय तहे ततत्तन बोधी रह्य कर नाव ॥

एहो ज्ञान कसो सो सब हरितत्व विधान ५७ वज्र

न काल लो विचरे जलमें तव हरि भये सुशोति ॥

वीणो प्रलय विविध नाना कर सहि खो वज्र भोति ५८

यह हरिमन्त्र रूप जब लीन्हो कियो चरित विलार ॥ जै
जै जै श्री मीन महा वषु जै जै जगत अथार ५५ सुर अरु अ
सुर मयन कीनो निधि चौदह रतन निकाश ॥ परवत
पीठ धरेव हरि नीके लियो कूर्म अवतार ६० हरित क
शिपु अति प्रबल दन्त है कीन्हो तप परचंद ॥ तब
उन वर दीन्हो चतुरांगन कीन्हो अमर अखंड ६१ जब

वे.रा. तप गायो तवहि मचवाने सवसेपति गहि लीन्ही ॥ ग

॥८

हे जव कच कामिनि राजा को तव नारद सितदीन्ही ॥२

॥८
याके गर्भ वसतहे हरि जन सुन सरपति यह वात ॥

तव तज दई आशु लै आये निज आश्रम विख्यात ॥३॥

निज प्रतिज्ञान कथा हेसनसों करत रहत सुति राज ॥

सुनि प्रह्लाद प्रसन्न कोपिमें अति आनंद समाज ॥४॥

तापाच्छे तप कियो असुर वड्ड फिर देवो निज थाम ॥

तब नारद मति दर्श कथा धूले आयो है गाम १५ पाछे

लोक पाल सब जीते सब पति दियो उदाय ॥ बरुन ऊ

वेर अगति यम मारुत सबस कियो सिणमाय १६

हाहाकार भयो सब लोक न गये सबे अज पास ॥ तब

अज ध्यान कियो माधव को वानी भई अकास ॥ १७

वे-रा

११५

११९

सकल लोक यह देत असुर उखत ऊन करो संचार ॥ जब
मेरे जनको उख देहै छिनहि में आरो मार १०६ जब प्र
ज्ञाद प्रगट याके गरु पांच वर्षके भयेहै ॥ आर वज्र
कीन्हो राजाने पटन विप्र गरु गयेहै १०७ जब वह विप्र
पद्मावे ककु ककु सनके चित थरि राधे ॥ जब वह जा
य तबहि सब दिन सो राम राम सख भाधे ॥ ११० ॥ लरि

का और पढ़त शास्त्रा में तिनहि करत उपदेस ॥ हरि
को भजन करो सबही मिल और जगत सब लेस ॥
यहि विधि कर उपदेस सबनको किये भजन रसलीन
संडा मर्क जो एखन लाग्यो तब यह उत्तर दीन ॥ राम
कस अवतार मनोहर भक्तनके हितकाज ॥ सोई सार
जगतमें कहियत मनो देव हिजराज ॥ पही बात

वे.रा.

१२०

१२०

जगतमें नीकी सोई पढत हम आज ॥ जवहीं विप्र
कह्यो जो असुर सो प्रपढत विनकाज ॥ ११४ तब
हि असुर प्रह्लाद बुलाये लिये गोद भारि अंक ॥ क
ह्यो प्रपन्नम कस पढोहो पढत कह्यो निसेक ॥ ११५
प्रवण कीर्तन स्मरण पादरत प्रचन वेदन दस ॥
साख्य और आत्मा नैवेदन प्रेम लक्ष्मणाजास ॥ ११६

सुनो पिता हो यही पद्योद्रे और बात नहि जानू ॥ इन
नैं और मोहि जो कहियत सो कवहू नहि मानू ११७ ॥
दीनो पटक भूप थरनी पकसो विषसो लीज ॥ रेस
राव न कहा पढायो कैसे देउ तोहि रीज ११८ जो यह
मेरो वैरी कहियत ताको नाम पढायो ॥ देइ गिराय
याहि परवत तै दिनगत जीव करायो ११९

बे-शा- **खिलत दीनों सर सैलते भूपर घन जल भीतर डरो ॥**

१२१

सर अग्निमै शास्त्रन मारो नाना भोति प्रहारो १२० ॥

तऊ नचात भई अंगन की जहै तहै राम बेचायो ॥

तब नृप आप शास्त्र करगार कै वज्रतहि शस दिवायो

१२१ कहै है राम कल वर तेरो ये कहि गरजन कीनी ॥

चटचट जल थल बोस थरनिमै व्यापक यह धनि ली

नी १२२ तवले खड्ड विभमे माये भयो शब्द सुनिभारी-

प्रगाट भये नर हरि वष थरि हरि कट कट करि उचारी ।

१२३ एकर लियो छिन मोऊ प्रसर वल शरो नखन

विदारी ॥ रुथिर पान करि श्रोत माल थरि जैजै शब्द

उचारी १२४ माये दैत्य उष्ट एक दिन मै जै नरसिंह

वष थारे ॥ बुद्ध पन दष्टि करत सरनर सुनिभये भक्त

वे.रा.

१२३

१२३

राववाये १२५ रमा निकट नहि आवत हरिके ऐसे व
प्र हरि थारो ॥ अज मन कारि देव नारद मनि जानन
रूप निहारो १२६ अपनी अपनी स्तुति करके सब
हिन यहै सुनायो ॥ गान्धर्व अरु विद्याधर चारन
विमल यश गायो १२७ तब प्रह्लाद आय हरि पद
सो शीश नाथ यह भाष्यो ॥ जै जै जै जगदीश जगान

चरनकमल प्रनुराग १३४ क्रियाकरि दीन्हो करुना
नियि अटल भक्त थिर राज ॥ अंतर ध्यान भये हरि
तहेनै सफल भये सब काज १३५ नारद रूप जगत उ
दारन विचरन लोक नमो ॥ करि उपदेश ज्ञान हरि
भक्तहि अरु वैराग दफ्ताय १३६ स्वाये भू सत रूपा
दोऊ कहियत है अवतार ॥ जग को थर्म प्रचार किये

वे.रा.

१२४

१२५

भव भक्तकर्म आचार १३१ करुना करजलतिथिते
प्रगटे स्या कलसलै हाथ ॥ आशु वेद विस्तारन का
रण सकल ब्रह्मउके नाथ १३८ तन्नी उष्ट वळे जो भव
परलियो कल अवतार ॥ परसराम कै कै दिजयापे
हूँ कियो भवभार १३५ खजल वेश वत्तर चूडाम
नि प्रहृषोत्तम अवतार ॥ दशरथके गृह जन्म लि

यो हरिरूपराससुखमाद १४० रावणा जेभकरन अस
राधिय वडे सकल जग माहे ॥ सर्वहि न लोकपाल
उत जीते कोऊ बोव्यो नारे १४१ सकल देव मिल जा
य प्रकारे चतुरानन के पास ॥ ले शिव संगे चले च
तुरानन हीर सिंह साव वास १४२ अस्तुति करि व
हु भोति जगाये तब जाये निज नाथ ॥ आज्ञा दई

वे.रा.

१२५

जाय कपिजलमें प्रगटे सब सरसाय १४३ तब ब्रह्मा

सब दिन सोभाष्यो सोई सब सर कीन्ही ॥ सानो दीप

जाय कपिजलकमें आय जन्म सर लीन्ही १४४ अपने अं

श आय हरि प्रगटे पुरुषोत्तम निजरूप । नाशयण अ

वभार हरोहै अति आनंद स्वरूप १४५ वासुदेव यो कह

त वेदमें है एतन अवतार ॥ शेष सहस्र मात्र रदत

निरंतर तऊत पावत पार १४६ सहस्र वर्ष लो ध्यान
कियो शिव राम चरित सख सार । अत गाहन करि
कै सब देख्यो तऊत पायो पार १४७ विनी समाधि
सनी तब हक्यो कहो परम गुरु ईश ॥ काको ध्यान
करत उर अंतर को हरण जगदीस १४८ तब शिव क
ह्यो राम गुरु गोविंद परम इष्ट एक मेरे । सहस्र वर्ष

बे-रा.

१२६

१७०

लौ ध्यान करतहौ रामकल सावकैरे ॥ १४९ ॥ तामे
राम समाधि करी अब सहस्र वर्ष लो वाम ॥ अति
आनंद मगन मेरो मन अंग अंग पूरन काम ॥ १५० ॥
दाया करि मोको यह कहिये अमर होऊ जेहि भोति-
मोहि नारद मुनि तत्वे बतायो ताते जिय अऊ लोति
॥ १५१ ॥ तव सहदेव कृपा करिकै यह चरित कियो विस्ना

२ ॥ सो बहोद प्रमाण व्यास मनि कियो वदन उचार
१५२ मनि वालमीक क्रिया सातो अवि राम मेव फल
पायो । उलटो नाम जपत अच वीनो पुन उपदेश क
रायो १५३ राम चरित वरनन के कारण वालमीक
प्रवतार । तीनों लोक भये परिहरण राम चरित स
खसार १५४ शत कोटी रामायण की नी तऊन तीनों

वे-रा-

१२७

१२

पार ॥ कसो वशिष्ट मनि रामचंद्र सो रामायण उच्चा
र १५५ काया भसंड गरुड सो भाष्यो रामचरित अव
तार । सकल वेद अरु शास्त्र कसो है रामचंद्र जस
सार १५६ कछु संक्षेप सूर अव बरनत लखमति डर
बल बाल । यह रसना पावन के कारन सेंटन भव
जे जाल १५७ तीनो दूर संगै प्रगटे प्ररुषोत्तम श्री

राम । संकरषण प्रचुम्न लक्ष्मिमा भवत महासख

थाम १५८ शत्रुघ्नहि प्रनरुह कहीयत है चतुर व्यह

निज रूप । रामचंद्र प्रगटे जव गदह में हरषे को मल

भूप १५९ अथ नक्षत्र नवमी ज परम दिन लगन

अह अभवार । प्रगट भये दशरथ गदह परन चतुर्थ

ह अवतार १६० अति फूलें दशरथ मनहों मन कौ

वे-रा

१२८

१२८

सित्पा सखपायो । सौमित्रा कैकड मनप्रानेदयह सब
दिन सुतजायो ॥१॥ गुरु वशिष्ठ नारद मुनि ज्ञानी ज
न्मपत्रिका कीनी ॥ रामचंद्र विखात नामयह स
रमुनि की सखि लीनी ॥२॥ देतदान नरपराज हि
जन को सुरभी हेमप्रणार । सब खेदरि मिलिमे
गल गावन केवन कलश उगार ॥३॥ आये देव औ

रसनिजन सबदे प्रसीस साविभायी । अर्पने अर्पनेथा
मचले सब परम मोद रुचिकारी १६४ मनवाञ्छित
फल सबहि न पायो भयो सबत आनेद । बाल रूप कै
के दशरथ सत करत केल सखेद १६५ चुहरन चलत
कनक आगन मै कौसल्या खवि देखत ॥ नीलनलि
न तन पीत ऊगलिया चनदामिन उतिषेखत १६६

वे. रा. कवञ्जक माखन रोटी लेकै बिल करत पुन मोगात ॥ स
१२५
१२९ खिचवत जननी समजावत आयकैठ पुन लागात ॥ १६०
कागभुसंड दशको आये पांच वर्ष लो देखे । स्तुति
करी आपवर पायो जन्म सफल करि लेखे ॥ १६१ क्रिया
करि निज थाम पढायो अपनो रूप दिखाय । वाके
आश्रम को उवसत है माया लगत न नाय ॥ १६२ ॥

प्रातःकाल उठ जननि जगावत उठो मेरे वारे राम ॥

उठि बैठे देत बनलै आई करी सखारी शाम १७० वा

शेभात मिल करत कलेऊ मधुमेवा पकवान । जल

प्रातमन आरती करकै फिर कीन्हो असनान १७१

करत सेंगार चार भइया मिल शोभा वरनि न जाई ।

वित्र विवित्र सीस चौतनिया इद्रथ सकल विच्छाई १७२

वे-श-

१३-

१३०

मलकावलि सक्तावलि रंणीयेर सुरंग विराजै ॥

मनजे सरसरी थार सर स्वती यमना मथ विराजै ॥

निलक भालपर परम मनोहर गोरोचन को दीनो ॥

मानो तीन लोककी शोभा अधिक उदय सो कीनो

१३४ खिजन नैन बीच नाशा पद राजत यह प्रबहार ॥

खिजन जग मनो लरत लराई कीर बजावत शर १३५

नाशाके वेसरमै सोती वरन विराजत चार ॥ मनो
जीव शानि अक्रणकहै बाफे रविके द्वार १०६ ऊँडल
ललित कपोल विराजत ऊलकत आभा गेड ॥ इंदी
वर पर मनो दीवियत रवि की किरन प्रवेड १०७ ॥
अरुणा अथर दसकत दसनावलि चारु चिबुक मस
क्यान । अति अनयाग सथाकर सोचत दाहिम बीज

वे. रा.

१३१

131

समान १०८ केह सिरी वित्त पदक विराजत वडमणि
मन्तासार । दहिनावर्त देत फवतावे सकल नाखत
वडवार १०९ रतन जडित केकत वाज्र वेद नगान सु
दिका सोहै । शर शर मन मदन विटपत रु विकच दे
ख मन मोहै ११० कटि किंकिणि रुनजन सुनितन
की हेस करन किलकारी ॥ नृप र धनि परा लालि प

हैया उपमा कौन विचारी १८१ भूषन वसन आदिस
व रच रच माता लाउ लशैवे । रामचेइकी देव माथरी
दरपन देव दिखौवे १८२ निज प्रति चित विलोक म
करमै हेसत राम साव राम । नैसेई लक्ष्मन भरत श
बहन खिलत डोलत पास १८३ दशरथ राय न्हाय
भोजन को बैठे प्रपनेधाम । लावो वेगि राम लक्ष्म

वे.रा.

१३२

१३२

न को सति आये सावधाम ॥ वैदे सेवा बाबा के चा
रो भैया जेवन लागे ॥ दशरथ राय आष जेवेत है अ
ति आनंद अनुरागे । १८५ । लख लख शास राम साव
मेलत आष पिता साव मेलत । बाल के लिको विस
द परम साव साव समुद्र न पकेलत १८६ दाल
भात हत कछी रुखीनी अरु नाना पकवान ॥

आशेरान नरप चारिपुत्र मिलिअति आनेद निधान

१८७ अचवन कर पुन जल अच वायो जब नरप वीरा

लीनो । रामलक्षणा अरु भरत शत्रुहन सबनहिन

अचवनकीनो १८८ वीरा लाय चले खिलनको मि

लिकै चारो वीर । साखा सेरा सब मिले वरा वर आ

ये सरजू तीर १८९ तीर चलावन साखा साखावन

वे. रा. थर निसात देखावत ॥ कवडेक साधु अचछादि
१३३
१३३
आपुन नाना भोति नचावत ॥ कवडे चार भान
मिलि अगिया जात परम सावणावत । हरिन आ
दि वडजेतु किये बथ निज सरलोक पदावत ॥
यहि विधि वन उपवन वड क्रीडा करी राम साव
दाई । बालमीक सुनिकही कृपाकर कछु एक सर

जोगाई १५२ भई सोऊ जननी देखत है कहो गये चा
रो भाई । भूख लगी है है लालन को लावो वेग बुला
ई १५३ इतने सोऊ चार भइया मिल आये अपने थाम
साखुं बत आरती उतारत को सल्या अभिराम १५४
सौ मित्रा कै कई साखु पावत वडू विध लाउ लखवत
मधु सेवा पकवान मिटाई अपने हाथ जेवावत १५५

वे. रा.

१३४

१३५

चारो भ्रातन अमित जातिके जननी तब पोछाये ॥
चोपत चरण जननि अप अपनी कछुक मथुर सरगा
ये १५६ आई नींद गम सख पायो दिन को अम विस
रायो । जागे भोर दौरि जननी ने अपने के ह लगायो
१५७ मिखा मित्र बडे सनि कहियत यज्ञ करत निज
थाम । मारि व और सबाहु महा सर विचन करत

दिन याम १५८ परेब्रह्म अवतार जानै के आये नृपके पा
स ॥ दशरथ राय बद्धत राजा विधि किये प्रसन्न हुआ
१५९ भोजन कर जबही ज विराजे तब भाष्यो मनि राय
यज्ञ सफल कीजै मेरो अवदीजै राम पदाय २० तब
नृप कस्यो राम है बालक मोको आजा कीजै ॥ तब
दिज कस्यो राम परमेश्वर वचन मान यह लीजै २१ ॥

वे.रा.

१३५

१३५

गुरुवसिष्ठ सब विध समजाये राम लखन संग दीने ।

मारगमें अहिन्त्या उद्योगे नावक निज पद छीने १-२

विद्यामित्र सिखाई वद्विधि विद्या यन्त्र प्रकार ॥

मारगमें ताउका जग्राई वदन पसार १-३ दिनमें राम

नरत सौ मारी नेक न लागी बार ॥ हीन्दी मुक्ति जानि

निज महिमा प्राये अरुषिके द्वार १-४ कीन्हे विप्रयत्न

परि श्रुत प्रसर विज्ञ को आये । अग्नितान करदह
न कियो है एक समद पढाये २५ जनक विदेह कि
योज स्वयंवर बड़ न्य विप्र बुलाये ॥ तोरन यन्त्र
देव शंकर की काहू जनन न पाये २६ विद्या मित्र सु
नि वेग बुलाये सकल सिष्य लै संग ॥ राम लक्ष्म
ण संगालिये आपने बले प्रेम रसरंग २७ जहे नहे

वे.श.

१३६

१३६

उक्त ऊरोवा जोकत जनक नगर की नार । वित
वनि कृपायाम अब लोकत दीनों सखत प्रणार २८
कियो मनमात विदेह नृपतिने उपवन वासो कीनों-
देवन राम चले निज घर को सख सबहिन को दीनों
२९ सब घर देवि यन्मष पुन देख्यो देखे महल संगे
अद्भुत नगर विदेह विलोकत सख पायो सब प्रेमा ३०

कहत नारि सब जनक नगर की विधि से मोद पसा
र सीताजू को बर यह चहिये है जोरी सज्जमार २११
अपने थाम फिर तव दोऊ आये जान भई ककु सोऊ
कर डेडवत परसि पद ऋषि कै वेढे उपवन सोऊ २१२
संथा भई कृत्य नित कर कै कीनों ऋषि परनाम ॥
पौछे जाय चरन सेवा दिन करके प्रति विसराम २१३

बे-रा- ब्रह्म सहस्रत भयो सवेरो जागे दोऊ भाई ॥ कर परना
१३७
१३७
म देव गुरु हिजको जल सहस्त्रान कराई २१४ प्राये
भूपदेश देशानके जरी सभा प्रति भारी । तहो बुला
ये सकल हिजनको जनक सभा में जारी २१५ कौ
शिक मनि तह छवि सौ पथारे लिये शिष्य संग सात-
वले नित्य शान्तिक सब कर हिज उर आने दन समात २६

होनों भात संग मैलीन्हें आये राज ड्यार ॥ जहे वैदे
सब भूप ओपसो वाछो गारभ अणार २१० अपने अप
ने भुजवल तोलत तोरत थनुष प्रार । ककु नहिच
लत विसाने भये सब रहे वड्डत पचिहार २१८ सीता
करत सहेलिन सो अनि यही करत खुनेद । तव उ
न कसो सकल सख सागर सोये परमानेद २१५ ॥

वे. रा.

१३८

138

बार बार जिय सोच करत है विधि सों वचन उचारी ॥
मन क्रम वचन यहै वर दीजो सो गत गोद पसारी २२-
एक बार सब देवी पूजत भयो दस सखि मोह ॥ ता
दिन तैं छिन कलन परत है सत्य कहत हो तोह २२-
सब न्यप पचे थनष नहि दूट्यो तव विदेह उत पायो ॥
क्रोध वचन करि सब सैं बोले क्षत्री की उन रहयो २२-

यह सनि लक्ष्मण भये कोथ अत विषम वचन यों बो
ले । सूरज वेश लपति भूतल पर जाके बल विन तोले
२३ कितक बात यह थनुष रुद्र को सकल विखकर
लै हों । आत्ता पाय देव रख पतिकी कनक मोऊ रुद्र
गो हों २४ सबके मन को देखे अंदे से सीता आरत
जानी ॥ राम वेद तव ही अकलाने लीन्हों सारे ग पा

वे-रा-

१३५

131

नी ३५ छिनमें करले केज वढायो देवन है सब भूप-

डीव तोर अचात शह भयो जैसे काल को रूप ३६

सवही दिशा भई अति आनर परगाम सति पायो ॥

परस सम्हार सिष्य सेगलै के छिनही में तहे आयो

३७ जैजै कार भयो जगती पर जनक राज अति हरषे ।

सुखिमान सब कौतक भूले जै पुन समनत वाषे ३८

जनक राज नवविष पढाये वेरा वरात बुलाई ॥ द
शरथ राज वाजि यजलै कै सबही सौज तयाई २२५
खिलत चली वरात विपल यनलै कै जे मन्त्र नहि
पार । शोभा सिंध करत नहि आवै वरनन करत उवा
२२६- गुरु वशिष्ट मनि लगान दियो शुभ शुभ नक्ष
त्र शुभवार । आये जान न्यपति सनमाने कीही अति

बे.रा.

१४.

१५०

मनहार २३१ व्याह केल सख वरनन कीन्हो मतिवा
लमीक प्रणार । सो सख सूर कसो वह कीरत जगत
करी विस्तार २३२ वेद शास्त्र मय करी व्याह विध सो
ई कीन्हो नृपराय । राम लखन प्रह भरत शत्रुहन
चार वेदिये विवाय २३३ होम हवन हिज पूजा गान
पति सूरज शक्र महेश । दीनों दान वज्रन विप्रन

३५

को राजा मिथिल नरेश २३५ खिलत यहि विथ ॥

उत सब भयो परम आनंदको वडत दाय जो दीनो ॥

भये विदा दशरथ न्यन्य सौ गवन अवध पर कोनो

२३५ भय पति आय जानि जब रघुपति मिले थाय

शिरनाय । दशरथ राय विनय वड कोनो जिय में

प्रति उरपाय २३६ खिलत यहि विथ हरि होरी हो ॥

वे-श-

१४८

१५१

नवमति कस्यो यन्वषको तोरेव रुद्र परम गुरु मेरे ॥

रामचंद्र शरण गुरुषोत्तम नेक नयन जब हैरे २३५

लीन्हो अंस विव भृगु पति को अपने रूप समायो ॥

कयो जायत पशैल महेन्द्र पै मति मति वर शिर नायो

२३८ अति आनंद अयोध्या आये कियो नगर सेंगार ।

कदली बिभ चौक मोतिन के बोधी वंदनवार २३९

कियो प्रवेश राज भवन नमैं राम वेद सखि राम ॥ अ
दभत भवन विराजत रतनन सुरज कीटि प्रकास ४
हादश वर्ष विराजै बालक फिर भूभार रही । कैकेई
के वचन प्रमाण कियो नृपत बयह काज करी २४
वचन समुक्त नृप आज्ञा कीनो देव उपाय करो । राम
वेद पितृ आज्ञा मानी जिय मैं वचन थरो ॥ २४ ॥

वे. रा.

१४२

१५२

यह भूभाउ उतारन खणति वहुत अखिन सख देन.
वनीवास को चले सिया संग सख निधि राजिव नैन
२४४ मारग में हरि कृपा करी है परम भक्त एक जान
तहने गये ज चित्रकूट को जहो मनन की खान ४४
वालमीक सनिवसत निरंतर राम सेव उचार । ता
को फल यह आज भयो मोहि दस दियो कुमार २४५

सूजाकरतपथराय भवन में रामवेद परनाम । कि
यो विविध विध सूजाकर के ऋषि चरनन शिरनाम
२४६ वज्रत दिवस लोवसे जगत गुरु विप्रकूट निज
थाम ॥ किये सनाथ वज्रत सति कुलको वज्र वि
थ हर काम ॥ भरत जान नियमै स्वपति को डः
सह परम वियोग । आये साय संग सब लेके घर

वे. ग. वासी रट्टर लोग २४८ विन दशरथ सब चले तरत ही कौ
१४३
मल पर के वासी । आये रामचंद्र माव देखो सब की मि
१५३
ही उदासी २४५ रामचंद्र प्रति सब जन देखे पिता न दे
खन पाये ॥ एखी बात कसौ तव काहू मन बड़ विथ
विलाखाये २५० वेदसीति करि रचुपति सब विधि म
रजादा प्रनसार । बड़त भोति सब विथ समजाये भ

रत करी मनुहार २५१ गुरुवशिष्ट मनि कह्यो भरत सो
राम ब्रह्म अवतार । वनमें जाय वज्रत मनि नारे हर
कैरे भवभार २५२ पुननिज विषय रूप जो अपनो सो
हरि जाय देखायो ॥ आजा पाय चले निज घर को प्र
भरि गीत समजायो २५३ कछु दिन वसे ज चित्र
कूटमें रामचंद्र सहभात ॥ तहोते चले देउकावन

वे-रा-

१४४

१५५

को माव निधि सोवल गान्त २५४ मारग में वड्ड मति
जन तारे अरु विराथ रिष मारे । वेदन कर सरभेरा
महा मति अपने दोष निवारे २५५ दरशान दियो स
तक्षण गौतम पंचवटी परा थारे ॥ तहो उष्ट सूर्यन
खा नारी करि बितनाक उथारे २५६ यद्द मति अरु
र प्रवल दल प्राये छिन मराम सेचारे । कीन्हें काज

सकल सरसुतिके भवके भार उतारे २५७ सुनि शरा
ल आश्रम जगये हरि वरु विध रजा कीर्ती ॥ दिव्य
वसन दीने जब सुनिने फिर यह आजा दीर्दी २५८
दशकंथर को वेग सवारो हर करो भवभार ॥ लोणा
मदा दिव्य वसलै दीने जनक कुमार २५९ सूर्यन
खा जब जाय प्रकारे नाक कान ले हात ॥ रावन

वे-श-

१४५

१४५

कोय कियो अनिभारी अथर फरक अनिगान २६०
गयो मारीव आश्रम हित वही वानै वड्ड समजायो
नव मारीव कस्यो दशकेथर विनती वड्डन करायो
२६१ रामचंद्र अवतार कहत है सुनिनारद सुनिपास-
प्रगट भये निश्वर मारन को सुनि वह भयो उदास-
२६२ करगहि खड्ग तोर वध करि हो सुन मारिच

उर मायो ॥ रामचंद्र के हाथ मरुंगो परम पुरुष फ
ल जायो २६३ कण्ठ करेग रूप थरि आयो सीता
विनती कीन्ही ॥ रामचंद्र कर सायकलै के मारन
की विथ कीन्ही २६४ मारि चथन वान लेना को
लक्ष्मन नाम पुकारि व । लक्ष्मन नाम सुनत
तहा आयो औ सर डष्ट विचारि व २६५ थरि के कण्ठ

वे.रा.

१४६.

१५६

भेष भित्तक को दशकेयर तहो आये । हरिलीली छिन
मै माया करि आपने रथ बैठाये २६६ बल्यो भाज गोमाय
जेत ज्यों लेके हरि को भाग । इतने राम चेद तहो आये
परम पुरुष वडु भाग २६७ जब माया सीता नहि देवी
जिय में भये उदास । एखन लगे राम डम गान सो वद
न वण्डी ड खरास २६८ मारगामें जटाश खरा देख्यो वि

कल भयो तन हीन । विनती करी समै जा सो वहुत
लगाई कीन २६५ जब तन तज्यौ गद्य रूपतिनव व
हुत करम विथकीनी २७० जायो सखाय दशरथ
को अपनी निजगति दीनी २७० मारगमें कसेथ रि
षु मोरेव हरपति काज सवारेव । पेण सरहरि
नरत पथारे जल को दोष निवारेव २७१ शिवरी परम

बे-शा

१४७

१५७

भक्त रघुपति की वदत दिनन की दासी । ताके फल
आरोगे रघुपति हरन भक्त प्रकासी २७२ दीन मक्ति
निज पुर की नाको तब रघुपति चले आगे ॥ सीता
सीता विलपत डोलत परम विरह सौ पागे २७३ ॥
खिलत यहि विथ हरि होरी हो ॥ रविनेदन जब मिले
राम को प्रह भेटे हनुमान ॥ अपनी बात कही उन ह

दिसो वालि बड़ो बलवान २७५ समताल वेथन हवि
कीन्हो वाली दिनकमें तारो ॥ दीन्हो राज राम रवि
नेदन सब विथ काम सवाये २७५ समदीपके कपि
दल आये जरो सेन अति भारी । सीता की सथ लेन
चले कपि छूटत विपिन मज्जारी २७६ जल निथ
तीर गये सब कपि मिल सति सेपान कि वानी ॥

वे.श.

१४८

१५८

लेक वसत सीता रिपु वनमें सब वानर यह जानी २७७

रामचरण कर समिरन मनमें चले पवन सत थाय०

राम प्रताप विचन सब भेदे पैदे नगर सावणाय २७८

धरिलख रूप प्रवेश कियो कपि लेकानगर मजार०

राम भक्त निज जान विभीषन भेदे हरि प्रेकवार २७९

तव वाने सब भेद बनायो देवी कपि सब लेक । राम

चरण थरि हृदय स्रदित मन विचरत फिरत निशोक

२८ जाय प्रसोक वाटिका देखी दरशन सीता कीन्ह ॥

कर देउवत वझत विनती कराम स्रदिका दीन्ह २९

सब से देस कसौ कपि सिय प्रति सनि हिय में थरि राखो-

राम से देस कसौ तब सीता जो बूजो सो भाखो ३० ॥

लागी भूष चले उपवन में नाना विध फल खाये ॥

वे.रा.

१४९

१११

विदुष उखार उजार विपिनको सबस्तिनको दर साथे
१८३ सुनि प्रकार निशिवर वडु आये कूदिसवनि से
चारे ॥ रेद जीतवल निथ जव आयो ब्रह्म प्रसु उन
अरे १८४ तासौं वेधे दशानन देखन चले पवन स
त थीर ॥ रावन वडुत ज्ञान समजायौ कथ कथ क
था गोभीर ॥ चले छुडाय छितक में तवही जारई

सब लेक ॥ कूदिवलै राज वनको जयकर ज्यो मरा
राजनि सेक २८६ आये तीर समुद्र मिले कपि मिले
आय जहे राम ॥ मरि मरि कथा अवन सीता की पु
लकित अति अभिराम २८७ करि कपि कटक चले
लेका की छिनमें बांधे सेत ॥ उत्तर गये पड़े चै
लेका पै विजय ध्वजा सेकेत २८८ पटये वालि कुमा

वे.श.

१५०

र विनय कर समजाये वदवार । चित नहि थरी काल
वस जायो फिर आये सकुमार २२५ असरत सरत उदा
र कल्पतरु रामचंद्रनथीर । विप्रभ्राता जायो जवि
भोषन निश्चर ऊटिल सरीर राख्यो सरत लेकेश कि
यो पुनि जव निश्चर सव मोरे । मायाकरी वदत नाना
विध सबको राम निवार २२६ केभकर पुन रेद जीत

यह महा बली बलसार । छिनमें लिये शेषमनि व
रज्यों लज्जी बली अपार २५२ कियो प्रसाद शान्तना कर
कै राज विभीषणादीनों । पुनि मेदोरि अचल आशु दै
अभयदान सब कीनों २५३ समाधान सरगत को कर
कै अमृत मेघ वरषायो । कृपा दृष्टि अबलोक कर
कै हन कपि कटक जिआयो २५४ निश्रर किये सक

वे-श-

१५८

सब साथव ताते जिये न कोय ॥ निरभय कियो लेके
स विभीषण राम लखन नृप दोय २५५ सीता मिली
वदत सावपायो थो रूप निज मायो ॥ प्रष्टक या
न वैदके नीके चले भवन सावखायो २५६ चले पव
न सुत विप्र रूपथरि भरतहि दैन वथाई ॥ जानि
हुत रघुपति को प्रभरित भरत मिले नवथाई २५७

सुनत नगर सबहि न सख मातो जह तहे न ते चले था
ई ॥ रामचे द पुनि मिले भरत सो आनंद उरत समाई २८
कियो प्रवेश प्रयोथामे तव चरचर वजत वथाई ॥ मे
गल कलश थराये द्वारे वेदत वार वेथाई २९ राजभ
वन मे राम पथारे गुरुवशिष्ट दरसायो ॥ श्रीस न
वाय वद्धत पूजा कर हरज वेस वढायो ३० ॥

वे. रा. समाधान सब दिन को कीन्हों जो दरसन को आयो ॥

१५२

कौसल्या कैकई समिधा मिल मनमे साव पायो ३-१

वैदे राम राज सिंहासन जगमें फिरी उहाई ॥ निर्भय

राज राम को कहियत हरनर मनि साव पाई ३-२

चार मूर्ति थवि दरसन आये चार वेद निजरूप प्रस्त

ति करी बजत नाना विध सीजे कौशिल्य भूष ३-३

शिव विरेच नारद सनकादिक सब दशानको आये ।

राम राज वैदे जब जाने सब हिन मन सख पाये ३४

लोकपाल अतही मन हरषे सब समनन वरषाये ॥

पुष्प विमान वैद हरि आये लै ऊवेर पड़े चाये ३५ ॥

प्रति आनेद भयो अवनी पर राम राज सख दास ॥

कृतप्रग धर्म भये जेता में हरनरमा प्रकास ३६ ॥

बे-शा

१५३

असमेय वदयन किये अनि पूजै हिजन अपार ॥ हय
राज हेम येन पाटेवर दीन्है दान उदार ३० चरित अने
क किये रत्नायक अवधारी सावदीनों ॥ जनक
सता वदलाउ लखावत निपट निकट सावकीनों ८
जोन वसेत वदत डम फूलै जनक सता अनुरागे ॥
प्रेम प्रवाह प्रगट प्रगटायो होरी खिलन लागे ३०५

कवडं क निकट देख वरषा अतः फूलत खरिया ॥
हिंशेरे रमकत जमकत जनक सता संग हाव भाव
वित्त चोरे ३१० कवडं कमल सरोवर उपवन जनक स
ता संग लीने ॥ नानाजल विहार विहार है सतजन
न साखी दीने ३११ कवडं करनन महल चित्रसारी
सरद निशा उजियारी ॥ वैदे जनक सता संग वि

वे.श.

१५४

१५५

लसत मधुर केलि मनहारी ३१२ कवड्डेक प्रगार भूषना
ना विथ लिय सरोथ सावकारी ॥ कवड्डेक निरतत दे
व नदी लावि रीकत है सावभारी ३१३ राम विहार क
ह्यो नाना विथ बालमीक सनिगायो ॥ वरनत चरि
त विस्तार कोटि सतत ऊपर नहि पायो ३१४ स्वर सम
इकी बंद भई यह कवि वरनन कहा करि है ॥ कहत

चरित रचनाय सरस्वती वैरीमत अनुरिहै ३१५ अथ
ने थाम पदाय दिये तव परवासी सब लोग ॥ जैजैजै
श्रीराम कल्यातरु प्रगट अयोध्या भोग ३१६ उष्टपति
जव वैदे भवपर थारि भूष पतिकी रूप ॥ छिनमै भव
को भार उतारेव परसराम दिज भूष ३१७ व्यास रूप
कै वेद विस्तारे कीन्ह प्रगट प्रान ॥ नाना वाक्य धर्म

वे.श.

१५४

१५५

शापन को तिमिर हरत भव भावन ३१८ बुद्ध रूप क
लि धर्म प्रकाशो दया सबन की मूल ॥ हर कियो पा
खंड वादहारि भगवत को अनुकूल ३१९ कलिके आ
दि श्रेष्ठ कृत प्रयागे है कल की अवतार ॥ मारि मले
न धर्म फिर बाण्यो भयो जग जय जय कार ३२० कर्म
वाद शापन को प्रगटे शक्ति गर्भ अवतार ॥ सुधापान

दीन्हों सरगानको भयो जग यश विस्तार ३२२ असुर
नको व्यामोह कियो हरिथरो मोहनीरूप ॥ अमृत
पान कराय सरनको कीन्हें चरित अन्त ३२२ तैसैं ही
भव भार उतारन हरि हलधर अवतार । कालिंदी आ
कर्ष कियो हरि मारि दैत्य अपार ३२३ गज प्रहाराह
ले जल भीतर तव हरि समिरन कीन्हों ॥ छोउ गुरु

वे-रा-

१५६

१५६

उ सावित्रास सोवरो भक्तन को साव दीन्हो ३२४ जब

वज्र असुर वडे शिवीपर कियो अनर्थ विस्तार ॥

सत्यसेन प्रगटे विसेभर सत्य कियो है अपार ३२५ ॥

निज वैकुण्ठ वसायरमापति कियो रमा कोहेत ॥

विनती सति कमला की केशव कीन्हो साव सेकेत

३२६ ब्रह्मचर्य पापन के कारणाथरो विश्व प्रवतार ॥

जहे तहे मनिवर निज मरियादा यापी अचट अणार
३२० अजित रूप है शैल यरो हरि जल निध मणवे का
ज ॥ सर अरु असर चक्रित भये देवत किये भक्त के
काज ३२८ जव बलि राजा गये देव घर लीन्हों स्वर्ग कु
अय ॥ अदिनी उचित भई कश्यप सो विनती करी
सुनाय ३२५ तव कश्यप मनि कसो पयो व्रत विधि सो

वे-श-

१५७

157

करो वनाय । ताकी कृत्व जन्म हरि लीन्हें श्रीवाम
न सखदाय ३३- भादों अवण द्वादशी शुभ दिन थ
रो विप्र हरि रूप ॥ शिव विदेवि मनकादिक आये
वन्दनको सखभूष ३३- यज्ञउपवीत विथोक्त कि
यो विधि सब सर भित्ता दीनी ॥ वामन रूपवले
हरि द्विज वरवल्लिको मन सख कीनी ३३- देउ क

मेउल हाथ विराजत और ओरे मगाला ॥ थरि
वदरूप चले वामनज्जु श्रेष्ठ नैन विशाला ३३३
सूरज कोटि प्रकाश श्रेष्ठ कटिमें खला विराजै ॥
करी वेद प्रतिन्य होरै मनहु महावन गाजै ३३४
मनि थाये तवहौ बलि राजा आय चरण शिर नायो-
विनती करी वदत सख मायो आज भयो मन भायो ३५

वे. रा.

१५८

५८

चलिये विप्र यज्ञ शालामें जहों दिजवरसव राजै । आ
ये ब्रह्म सभामें वामन सूरज तेज विराजै ३३६ तव न
पकस्यो कच्छु दिज मोगो रतन भूमि मणि दान ॥ इ
य राज हेम रतन पाटम्बर देखौ प्रगट प्रमान ३३७ ॥
तव बोले वामन यह बानी सुन प्रह्लाद कुल भूष ॥
वज्रत प्रति ग्रह लेत विप्र जो जाय परत भव रूप ३३८

तीन पैर वसथा हम पाँव परन ऊरी एक कारन ॥
जब नृप भव सेकल्य कियो है लागे देह पसारन ३३
एक पैर मैं वसथानापो एक पैर सरलोक ॥ एक पै
उरी जै बलि राजा तब है हो वितशोक ३४ नापो देह
हमारी हिजवर से सेकल्यत कीन्हो ॥ सन प्रसन्न
वासन यों बोले तेमो के वसकीन्हो ३५ सदा हार

वे-रा-

१५४

१५९

तेरे हाथो है दर्शन देहों तोहि ॥ माया काल कबड़े
नहि व्यापै समिरन करतै मोहि ३४२ सतल लोकमै
थिरकर थाप्यो जहै विभूति प्रति भारी । गहिकै रा
दा हारपर हाथे वामन ब्रह्म मगरी ३४३ स्वर्ग लो
क सीन्हों सरपति को प्रति थिर कर कर थाप्यो । नि
गमनेति कहि रतत निरतर देव शत्रु सब कोप्यो ३४४

वामन रूप ब्रह्म हरि प्रगटे जिनको यश जगयावे ॥
शेष सहस्र सख रत्न निरंतर सूर पार किम पावे ३४५
पुन वलि राज हि स्वर्ग लोकमें पाँपेगो हरि राय । सार्व
भौम अवतार धरेंगे श्री वामन सख राय ३४६ पुनि
विभू रूप एक हरि लेंगे सकल जगत कल्याण । कप
ट खंड पाखंड असुर को पापे भक्त निदान ३४७ ॥

वे-श-

१६०

160

विषक सेन रूप हरि लेंगे कीन्हो शिव को हेत ॥ अस
र मार सब तरत विजारे दीन्हें रुद्र निकेत ३४८ धर्म से
त है धर्म वढायो भविको धारन कीनों ॥ शेष रूप है
यरा सीस फिर सब जग को सख दीनों ३४९ अंतर
यासी पासन कारणा निज स्वधर्म धरि रूप ॥ अन्त
दान दे सब जग पोष्यो किये काज हरभूप ३५० ॥

योग पेश पातं जल भाषो सोउ छीन जब जायौ । यो
गेश्वर वष थारि हरि प्रगटे योग समाध प्रसायौ ३५१ ॥
क्रिया पेश कृतिने जो भाषो सो सब प्रसर मिटायौ ॥
ब्रह्म भान है कै हरि प्रगटे छिन मै फिर प्रगटायौ ५२
यह प्रनेक प्रवतार कसके को करि सकै वातान ॥
सोई सुरदास ने बरने जो कहै व्यास प्रान्त ॥ ३५३ ॥

वे-रा-

१६१

161

ऐस कला अवतार श्यामके कविपै कहत न आवै-
जहे जहे भीर परत भक्तन को तहे तहे वसुध विधावे
३५४ माया कला ईश चतुरानन चतुर्व्यूह धरि रूप-
वाय वरुणा प्ररु यम कुवेर शशि मृत्यु अरिन सर
भूय ३५५ रवि शशि मृग मरीच सर प्ररु प्ररु चार
वेद वसु जात । जग कौ प्रगट करन परजापति प्र

गरे कला निधान ३५६ जो जो भूप भये भव मंडल
लोक पाल निज जान ॥ निज महिमा हरि प्रगट क
री है विधि के वचन प्रमान ३५७ सर प्ररु प्रसर रवी
हरि रचना सो जग प्रगट सब कीन्ही ॥ कीडा करो
वहुत नाना विधि निगम वात टछीन्ही ३५८ य
हि विधि होरी खिलत वहुत भोति सुख पायो ॥ थरि

वे.रा. अवतार जगतमै नाना भक्तन चरित दिखायो ३५५
१६२
१६२
प्रेम कला अवतार वद्धत विधि राम कृष्ण अवतारी
सदा विहार करत हजमेउल नन्दसदन सावकारी
३६ नित्य अखंड अन्तर्प अनायाति अवगत अनन्त
अनेत ॥ जाको आदि कोऊ नहि जानत कोऊन पा
वत अंत ३६ जब हरि लीला की सधि कोन्ही प्रगट

करन विस्तार । श्रीवृषभान रूपहै प्रगटे प्रति वृज
राज उदार ३६२ विद्या ब्रह्मकही यसमति सौजा
की रूप उदार । सोरह कला वेदज्यों प्रगटे दीनों ति
मिर विदार ३६३ पुन वसुदेव देवकी कहियत परि
ले हरि वर पायो ॥ पूरण भाग्य आय हरि प्रगटे यउ
कुल नापन सायो ३६४ आदेवह रोहनी आई शाख

वे.रा. चक्र वषथारो । ऊंडल लसत किरीट महाधनि वष
१६३
वसुदेव निहारो । प्रसन्नतिकरी वज्रत नाता विथ
१६३
रूप वत्सर भज देव्यो । पीतोंबर अरु श्याम जलद
वष निराव सफल दिन लेव्यो ३६६ तव हरि कस्यो
जन्म तमहरे गरु तीन वार हम लीन्हो ॥ एस्त्रीगर्भ
देव ब्राह्मण को कस रूप रेग भीन्हो ३६७ मागो सक

ल मनोरथ अपने मन बोद्धित फल पायौ ॥ शोख

वक्र गदा पद्म चतुर्भुज अजन जन्म लै आयौ ३६८

यह भव भार उतारन कारन हलधर को संग लायौ ॥

क्रीडा करो लोक पावन कर करो भक्त मन भायौ ३६९

प्राकृत रूप धरो हरि छिनमें शिष्य है रोवन लागे ।

तव वसुदेव देवकी निरावन परम प्रेम रस पायो ३७०

वे-श

१६४

१६४

तव देवकी दीन है भाषो तपको नहि पताजै । असे
वसुदेव जाव लै गोकुल कस्यो हमारे कीजै ॥ ३२॥
तव लै हरि पलना पोछाये पीनो वरज ओछाये । त
व वसुदेव शोस थरि पलना भयो सवन मन भायो ॥
गोकुल चले प्रेम आनर है बुलगाये कपट कपाट ।
सोये खान पहरु अरु सोये सवे सुक भई वोट ॥ ३३ ॥

नव वसुदेव लियो कर पलना अष्टने शीश चढायो ।
रेत अयेरो कछु नहि सूजन अटकर अटकर आयो ७४
शेष सहस फन ऊपर छाये चनकी वेद वचावै । आगे
सिंह झंकारत आवत निरभे वाट जनावै ३०५ जस
ना प्रति जल हर वहत है चरण कमल परसायो ॥
मारग दीन्ही रामसिंघ ज्यों नन्द भवन चलि आयो ७६

वे. ग.

१६५

पड़ेचे आय महर मेदिर मेनेकन सेकाकीनी । बाल
क थरिलैके सरदेवी सरत गवनकी कीनी ॥ ३५३ ॥
लैवसदेव तरत चर आये काहु जिय नहिजाते । जब
वह रोवन लागी तव सब जागपरे अकुलाने ॥ बाल
कभयो कस्यो नपसौ जब दौरिकेस तव आयो । कर
गह खडग कस्यो देवकि सौ बालक कहे पड़चायो ॥

तव देवकी प्रथीन कस्यो यह में नहिं बालक जायो ॥

यह कथा मोहि वक्त स वीर तूकी जे सो मन भायो ७६

कंस वंस को नास करत है कस समुझ दिस आयो ॥

मोको भई प्रताह दवनी ताते डर नहि जानी ३७७ क

मा मो गालई तव राजा नेक शोक नहि आनी ॥ पट

कत शिला गई आकासे कंस प्रतीत नमानी ३७८।

वे-श-

१६६

166

भई आकाशवानी सरदेवी केस यहो अव आई । तेरो
शत्रु प्रगटे वज्र वज्रमै काज लाव्यो नहि जाई ७५ ॥

जैसे मीन करत कल मीठा जलमै रहत समाई । त्यो

तव काल प्रगट एक कहत रहे लषण सकत तेहि

कोई । ३६ अंतर ध्यान भई सरदेवी केस प्रतीत जो

माती । तव वस देव देवकी के रह केस गयो यह

जानी ३८२ तस अपराध देहकी मेरो लाखो न मेखो
जाई । मैं अपराध कियो सिअ सारे कर जोरे विल काई ।
३८२ पुन गृह आय सेज पर सोयो नेऊ नीद नहि आवै ।
देश देश के हत बुलायो सब हिन सतो सुनावै ॥ ३८३
दीन हीन जो असर चढत बलि करत सकल पुनि तै
सो । बूझत नहि तन भार उतारेव जल को मोखन जैसो

वे.रा.

१६७

167

भयो भोर यशुमति गृह आनेद मंगल चार वधार्ई ॥ जा
गी महार प्रउमाव देवो आनेद उर न समाई ३८५ जैसे
शाशि प्रगटन शची दिशि सकल कला भरि पूर । यस
मति कृप आय हरि प्रगटे प्रसर निमिर कर हर ३८६
नेदराय चर छोटा जायो महार महा सख पायो ॥ वि
प्रबलाय वेद धुनि कीनी स्वस्ती वचन पढायो ३८७ ॥

रागिनी बंगाली नाल ३ ॥ राजलशेर ॥ एकहिरस
हवाको छोड़ मिया मत देस विदेस फिरे मारा ॥ क
जाक अजल्का लटै है दिन रात बजा कर नकारा ॥ क्या
भैसा बधिया बेल अतर क्या गाने पला सिर भारा ॥
क्या रोहे चावल मोह मटर क्या आराध आका अंगारा-
सब टाट पड़ा रह जावेगा जब लाट चलेगा वन जारा ॥

वे.श.

१६८

१६८

गहै नलक लीवन जाय और खिप भी तेरी भारी है ॥
प्रयगाफिल नऊसे भी चढ़ता एक और वश व्योषा
री है ॥ क्या शकर मिसरी कंद गिरी क्या सासर मी
दा खारी है ॥ क्या दाव मुक्का सौट मिरच क्या केस
र लौंग सपारी है २ तू बथिया ला देवें लभरे जो
सख पछिम जावेगा ॥ यासूद बढा कर लावे

गाया चाटा वाधा पावेगा । बटमार अजल्का रहे मैं
जब भाला मार गिरावेगा । धन दौलत नाती तोता
क्या एक भनगा पास न जावेगा ॥ ३ ॥ हर मैजिल
में अत साय तेरे यह जितना डेरा डरा है ॥ जरदम
दिरम का भंडा है बेहक सिपर और खोरा है ॥ जब
नाइक तनका निकल गया जो मलकों राश है ॥

वे.श.

१६४

169

फिर दोआहै में भंडाहैने हलवाहैने मोआहै ४ ॥

जब चलते चलते रस्तेमें यह गोन तेरीफल जावे

गी ॥ एक बथीया तेरी महीपर फिर चरने वास

न आवेगी ॥ यह बिपजो तने लादीहै सबहिस

सोमें बढ जावेगी ॥ थीहूत जवाई वेदा क्या बनजा

रा पास न आवेगी ॥ ५ ॥ कौनाहक बोज उ

हा नाहै इन गोनौ भारी भारीके । जब काल खदेरा
आन पडा फिर हनहै व्योपारीके । क्या साज जराऊ ज
र जेवर क्या गोटे धान की नारीके । क्या छोड़े जीन स
न हरीके क्या हाथी लाला अमारीके ६ जो खिप भरे
तु जानाहै यह खिप मिया मत जान अपनी । अब को
इ चरी पल सायत मै यह खिप बदन कीहै खपनी ॥

तखते शाल उशालोंके ॥ ८ ॥ ऊँच काम न आवे
गा तेरे यह लाल जमईद सीमो जर ॥ सब पूजी वा
टमैं विखरेगी जब आन वनेगी जोऊर ॥ क्या मसने
द तकिण मलक मकान क्या चौकी ऊरसी तखत छ
तर ॥ क्या मालख जाना मलक मकान दौलत
हशमत फौज लशकर ॥ ९ ॥ यह धूम थडका सा

वे. रा.

१७१

श लिये क्यों फिरता है जंगल जंगल । एक भूमगा
पासन आवेगा मौकफ द्रुया जब अन्न और जल ॥
वर बार प्रदारी बौपाए क्या खासा तनसख क्या म
ल मल ॥ क्या विल वनत कीये रेशम के क्या ला
ल पलेगा का रंग महल ॥ १० ॥ क्या प्रखत म
कान वनता है है विभ तेरे तन का पोला । ते ऊंची

गण्डी उदाता है यही गोरगण्डने मर खोला ॥ कपारे
नी खन्द करन्द वही का कोट जंगरा प्रममोला ॥
क्या बर्जरे हला तोप किला काशी शादरु रौर गो
ला ॥ ११ ॥ अब काल फिरा कर चावक को यह वै
ल वदन काहं केगा ॥ कोई नाज समेटेगा तेरा
कोई गौन सिंघे और टोकेगा ॥ हो छेर अकेला जंग

वे.श.

१७२

लमें त्वाक कल हदकी फाकेगा ॥ उस जेगलमें

जब आहनजीर एक भनगा आनन जोकेगा ॥ १२ ॥

यह पेंह अजावहै इतियोकी और क्या क्या जिनस उ

कटीहै ॥ यसे मालकीसी कामीदाहै और चीज कि

सिकी त्वहीहै ॥ ऊछ पकताहै ऊछ बनताहै प

क वान सिदाई पटीहै ॥ जब देखा खवना आवि

रको नेलहा भाउन भही है ॥ गुल शोर ववूला आगार
वा और कीचड पानी मही है ॥ हम देख चुके इस ड
नियों को सब थोखे कीय सीही है ॥ कोई ताज खदीरे
हंस हंस कर कोई तखतणा जवन खाता है ॥ कोई क
पड़े रंगो पहनो है कोई गुदरी ओढे जाता है ॥ कोई
भाई बाप चाचा मामा कोई माती हत करहा ता है ॥

बे-शा

१७३

जब देखा खूब तो आखिर को मे रिहता है ने नाता है
१७३ यत्न शोर । कोई सेह मरा जन लाख पनी जेव जाज
कोई पम सारी है ॥ यहा बाजा किसी का हल का है
और बिप किसी की भारी है ॥ क्या जाने कोन खरी
दे है और किसने जिनस उतारी है ॥ जब देखा
खूब तो आखिर को दलाल न कोई खोपारी है १४

कोई फल के बैठे मसनेद पर कोई रोवे अपनी दौलत
को ॥ कोई बोले अपना मुँह से लो और मेरा हेसा मुँह
को दो ॥ कोई लड़ता है कोई मरता है जगडे हक और
नाहक को ॥ जब देख खूब तो आसिर को कबुले
ना एक न देना दो ॥ रम्मल नजूमी आ मिल है
और फाजिल मुला स्याना हो ॥ कोई आमिल कामि

वे. रा.

१३४

लदाना कोई मस्त सिद्धा दीवाना है ॥ ताबीज फनीला
फालफले और जाड मेतर लाना है । जब देखा हू
बनो आखिर को सब हीला मकर वराना है १६ । को
ई लोटे कूचे गलियों में तैयार किसी का चेरा है ।
नित कजीये ऊगाडे रहै है यह मेरा है यह तेरा है ॥
जब देखा हू बनो आखिर को न मेरा है ॥ १७ ॥

कोई दोषी दोष बनाता है कोई बोधा फिर प्रमा मा है ॥

कोई साफ बरहना फिरता है ने पगड़ी न पाजा मा है ॥

कम खास राजी और गाछे का नित कजीया है ॥ जब

देखा हवतो आखिर कोने पगड़ी है ने जा मा है १८

कोई बाल बछाए फिरता है कोई सिर को चोट मझा

ता है । जब देखा हवतो आखिर को सब छोड प्रकेला

बे-श-

१७५

जाना है । १५ । कोई रोता है कोई हसता है कोई नाचे
है कोई गाना है । कोई खीने ऊपटेले भागे कोई थोस
डर दिख लाता है । कोई माल इकटा करता है कोई
ऊँजी ऊलफ लगाता है । जब देखा खूब तो आखिर सब
ऊगाड़ा रला जाता है २० । कोई वेवे भेग सगाव अफ सू
म कही दूध दही की फेरी है ॥ कोई पला सिर पद

लाता है कोई लादे वै लम केरी है । कोई ऊगडे अपनी
जागर पर यह मेरी है यह तेरी है ॥ जब देखा खवतो
आखिर कोन तेरी है न मेरी है न तेरी है ॥ कही वली
देकी एनी है कही खासी करवकी पुली है ॥ कही
वलनी ब्राज पिटारी है कहि बलरा वकी वली है ।
तरकारी वैगन सागरा गुड गाअ गाजर मूली है ॥

वे.श.

१७६

११६

जब देखा हवतो आखिरको सब विकरी देखत भू
लीहै २२ कही वान घटेरन टाट पगजी कही दमर
ख वमरावन कलाहै ॥ कही शेक रुपयेका खरदा
कही कौडी पैसा थेलाहै ॥ कही छटना खाज पि
टारीहै कही विकना खाट खोले लाहै ॥ जब देखा
हवतो आखिरकोने पीसी खाट न चखाहै ॥ २३॥

कोई शिकरा वाज उदाता है कोई हाथ में राव के ततली
है ॥ शरवाज कोई लै वैदा है और दोउ किसी ने उलती
है ॥ हैतार किसी के हाथों में और नाचती फिरत घुन
ली है ॥ जब देखा खूबनो आखिर को नरे शमस त
न सतली है ॥ अब किस्का रेरा बुरा कहिये और
किस्का रूप भला कहिये । एक दम की पैट लगी

वे.ग.

१७५

है यह प्रखोहम जा चरवा कहिये ॥ ये सैरत माशदे
नखजीर अक्का कहिये रेजा कहिये । कछु वात
नहीवन आनेकी बुप चाप भला है क्या कहिये । य
लशोर बहूला आगहवा औरकी चडु पानी मही है ॥
हम देख चुके इस उतियो को सब थोखि की सही है २५
वटमार अजल्का आपड़ेवा टक इसको देख दरो वावा

अवशकवह्य ओ आखोंसे और आँहें सरदभरो वावा ॥
दिल हाथ उठा कर जीने सेवे वस मन मार मरो वावा ॥
जव बापकी खातिर रोते थे अव अपनी खातिर रो वा
वा ॥ तन सखा ऊवरी पीट झई चोरे पर जीत थरो वा
वा २६ जव जीनेको तम रुख सत दो और मरने को
मह मान करो ॥ विगत करो इह सान करो या पुत्र

वे-श

१५८

११८

करो या दान करो ॥ या श्री लड़वटवा श्रेया खा
सा हलवा नान करो ॥ ऊछ लतफ नही अब जी
नेमें अब चलने का सामान करो ॥ १५ ॥ तन
रूपा ॥ दिल काटो अपना जीनेसे अब और गले को
मत काटो ॥ अब चाट रूना की टुक चवाखो और
हिन किसी का मत चाटो ॥ धन छोडो हिसे व

खरेकी और भाजी अपनी तम छोटे ॥ नाकेद वन्देरे
कूद बुके अब और उलनी मत छोटे २८ यह असव
इत कूदा उछला अब कोश मारो जेर करो ॥ अब मा
ल शकटा करतेथे अब तनका अपने फेर करो ॥ रा
फ हूदा लशकर भाग बुका अब ज्ञानमें तम शम शे
र करो ॥ तम सोऊ लडाई सार बुके अब भागनेमें म

वे-रा-

१०५

न देख करो ॥ २५ ॥ सिर कोण चोटी वालइ एमह
पीला पलकै आन कुकी ॥ कट टेजा कान इए वह
रे और ओवे भीवु थलाय गई ॥ सखनी दगई और भू
ख चटी दिल ससुइआ आवा जनही ॥ जो होनी थी
सो हो गुजरी अब चलनेमै कुछ देख नही ३० ॥ इस
पाव विसट कर चलनेसे मत रस्ते कों हैरान करो ॥

और पोपले सहसे रोटी को मत मल मल कर हल का
न करो ॥ अब आपद्म तम पानी से मत पानी का न
कसान करो ॥ कुछ लाभ नहीं इस जीने में अब मरने
से परहान करो ॥ ३१ ॥ जयनाल ॥ ज्ञान मथ
माने सोनर के ये जिनको रहत हैं निरु दिन खमा
री ॥ ज्ञान मथ पीवत भेदै खमारी सरत अंतर वि

वे.श.

१८.

80

ले लगी रहतारी ॥ अनेदरत मेरो सदा निसवा सर
नरक खरी भाग गये एक वारी ॥ कहत कवीर स
नो भाई सादो शरुकीनो प्रीत मोहे हरहेसे प्यारी ३२
कवित ॥ ताल ॥ शूलपाक ॥ पहरे आई नव स
त अवरन अतही सेदर लया बहोत सियानी ॥ गो
रे वदन पर अलको छूटी मानो चेदन ले पटानी ॥

मरगसे नैना को किल वैना कटके हरगजवाल सह्य
नी ॥ शाहे बहा इर ये खव निराखत रेडलोककी अप
सर विसयनी ॥ ३३ ॥ द्याल नाल ३ ॥ खडगल
बोह प्यारे भोरभे अडना ॥ दीप वाकी जोत चटी चे
दंडेका चोदना ॥ मोतनके हार सीतल फुरि आयो
अजना ॥ ३४ ॥ द्याल नाल ३ ॥ साडे नाल वो

वे.श.

१८१

लीवे आमीवे रेऊटे आवापेंगासि आलोदी ओगालि
आ ॥ ह्य हिंडि मोडे कारी कमरीया वाप असाडे दे
या पालिआ ॥ ३५ ॥ द्याल ताल ३ ॥ मीयो राजावे
सोणा नित साडे आडोदा ॥ माउही गल मनदा नहि
आपना आपजनामदा ॥ कोई समकाडो कौ पेक्षप
मावद दिखलामदा ॥ ३६ ॥ द्याल । ताल ३ ॥

पे गल मै नू ते दसी वे मीयो सोणे दे आमन दी उगाही
जिउअ देरा ॥ मै चंदन तेरा अजव पहरा वा केनी वे
दे गल हसि वे मीयो रा ॥ ३७ **ह्याल नाल १ महत**
लागी दे मीयो मैरी तेडे नाल तसी जाण दे नाही खो
न योवन प्यारा विरजग जीवे ईशक तसाडे नपढ
मी ॥ ३८ ॥ **इति शैरग जल ॥ ॥**

वे.रा.

१८२

१८२

१८२
२२
१५०

मिच्छति स्या सेवाय विवायरे । अस्या केत दले
ऊरु क्षण मिह भूते प लक्ष्मी लव क्रीते दास श्वो
प सेवित पदो भोजे कृतः सेधुमः ॥ सा स साधस
साने द गो विदे लोल लोचना सिंजान मेज्ज मेजीरे
प्रविवेश निवेशने ॥ अति क्रम्या पोगे अवणा
पथ पर्यंत गमन प्रवासे नैवाक्षणे स्तरल तरता

रा.म.
गी

रम्पतिनयोः । तदा नी राथायाः प्रियतम समा लोक
समये पपात सेदं व प्रसर यिव हर्षाकृतिकवः
७३ भजेत्यास्तुत्याते कृत कपट कगाइति विहितः
मितेयाते गेहाहिरव हिताली परिजने । प्रियाये
पश्येत्याः स्मर शर समा कृत सभगे सलजाया ल
जावगम दिव हरे मगादशः ७४ ॥ अष्टपदी ॥

राधावदन विलोकन विकसित विविध विकारवि
भेदो । जलनिधि मिव विधु मेडल दर्शन तरलित ते
गात्रेणो ॥ हरि मेकर सेचिर मभिलषित विलासे ।
सादृशी शुक हर्ष वशे वद वदन मनेग विकासे । श
रममल तरतार मरसि दयते परिलेख विहरे । स्फ
टतर फेन कंदेव करेवित मित यमना जल हरे ॥ २ ॥

रा.म.
गी.

श्यामल मण्डल कलेवर मेण्डल मधिरात गौर डकुले
नीलनलिन मिव पीत पराग पटल भरवल यितम्
ले ३ तरल दृगंचल चलन मनोहर वदन जनित र
तिरागे । स्फट कमलोदर खिलित खेजन प्रगामिव
शरदित डगो ४ वदन कमल परिशीलन मिलित
मिहिर सम ऊडल शोभे । स्मित रुचि ऊसम सम

लसिताथर पलव कृत रति लोभम् ५ शशिकिर
ण क्षुरितोदरजलथर संदर सज्जसम केशे तिमिरो
दित विष मेडल निर्मल मलयज तिलक निवेशे ६
विपल पुलक भरदेतारिते रति केलि कला भिरथीरे
मणि गण किरण समर समञ्जल भूषण सभगा
शरीरे ७ श्रीजयदेव भणित विभव दिशणी कृत

श-म-
मी-

भूषणभारे । प्रणमत हृदि विनिधाय ह्रीं सचिरे स
कृतो दय सारे द ॥ अष्टपदी ॥ श्लोक ॥ गतवति स
खी हृदे मेदत्र पाभर निर्भर स्मर पर वशाकृतस्फी त
स्मितस्त्रापिता यशम् । सरस मलसे दृष्टा दृष्टा मुक्त
नैव पलव प्रसर शयने नितिमाक्षी मवाच हृदिः
प्रियो ॥ किशलय शयने तले ऊरु कामितिचरण

कमल विनिवेशे । तवपद पल्लव वैर परा भव सिद्ध
मन भवतु सर्वेशे १ नृणा मधुना नारायणा मन्त्रा
त मनसराधिके । ॐ । करकमलेन करोति चरण
महासागमितासि विहरे । नृणा स्वप ऊरु शयनो
परमासिव नृपुत्र मनगतिहरे २ वदन स्यानिधि
शक्ति समस्त मितरचय वचन मन कुले । विरह

रा-म-
गी

मिवापन यामि पयोधरोयक मरसिडकल ॥३॥
प्रियपरिरेभणा रभसवलित मिवपुलकित मतिड
रवापम् । मधुरसिज्जकलशे विनिवेशय शोषय
मनसिज तापम् ४ अथर सथारस मपनयभासि
निजीवयस्त मिव दासम् । त्वयि विनिहित मनसे
विरहानल दग्धवप्रमविलासम् ५ शशिसुखि

मखरय मणि रशना गुण मन्त्र गुण केह निनादम्
श्रुति प्रगुले पिकरुत मम शमय विरादव सादे ६
मासति विफल रुषा विफली कृत मव लोकिनम
थनेदे । मीलतिलजित मिवनयने तव विरमवि
हजरति खेदम् ७ श्रीजयदेव केवेरिदमनुपदति
गदिन मथरिष मोदम् । जनयन रसिक जनेषम

ग.म.
गो.

नोरमरतिरसभावविनोदम। द॥ अष्टपदी॥ श्लो
क॥ प्रहृष्टः पुलको करेणानिविडास्तेष्वैर्निमेषेण
चक्रोडाकृतविलोकिते यरसथा पानेकथानर्म
भिः आनेदाभिगमने मन्मथकलापुद्गेपि यस्मिन्
भू उद्भूतः सतयोर्वभूव सरता रेभः प्रिये भावकः
७६ मीलहृदि मिलन्कपोलपलके सीत्कारथागव

शादव्यक्ता कलकेलिकाक विक सहेता अथौ नाथ
रे ससोत्काम्य पयोथरे भशपरिष्वेगात् करंगोटशो
हर्षोत्कर्ष विमक्त निःसह ननोर्थन्यो ययत्पानने ॐ
दोर्भा संयमितः पयोथर भरेणा पीडितः पाणिजै
एविहोदशनैः क्षताथरषटः श्रोणी तटे नाहतः ह
स्तेनानमितः कवेथर मधुसूदन संमोहितः को

श.म.
गी

तः कामपि तन्मि मापतदहो कामस्य वामागतिः ५८
वामो के रतिके लि सेक सरणा रंभातया साहस प्राये
कांत जयाय किंचिदपि शोभियत्संभ्रमो निस्येदाज।
वनस्थली शिथिलितो दोर्वलि रुक्मिणि वत्सोत्सी
लिते मति पौरुष रसः स्त्रीणां कृतः सिध्यति ५९। त
स्याः पादलपाणि जांकित मये निद्रा कषाये दृशौ

सनिर्दूतो यशोणिमा विललिता ससुखजो मर्दजाः
कोवीदामदरम्लशोचलमिति शानन्निवातैरुशारेभिः
कासशैरुददुतमभूतसर्मेनः कोलितम् ८० अथ
कोतेरति श्रान्तमपि मेरुते वीक्षयानिजगाद निगवा
थायथा स्वाथीनभर्त्तका ८१ इति मनसा निगदेते
सुरतोते सातिनोत विज्जोगीशथा जगाद सादर मि

रा.म.
गी

दमातेदेन गोविंदे दर प्रहपदी॥ ऊरु यउ नेदन चेद
न शिशिर तेरा करेण पयोथरे। मग मद पत्र कम
त्र मनो भव मेगल कलश सहोदरे। निजगाद साय
उनेदने क्रीडति हृदया नेदने। दथर चेंवन लेवित क
जल मज्जलय प्रियलोचने अति कुल गोजन मेजन के
रति नायक मोचने २ नयन ऊरेण तरेण विकामिति

वासकरे श्रुति मेडले । मनसि जपाश विलास करे ३
भवेष्ट निवेशय ऊडले ३ अमर चये रचयेत मपरिरुति
रे सचिरे मम सन्मावे" जित कमले विमले परिकल्प
य नर्मजन कमल केमले ४ मर्यामद रसललिते
ललिते करु तिलक मलिक रजनी करे । विहित
कलेक कलेक मलानन विप्रमित प्रम शीकरे ५

रा.म.
गी

सम रुचिरे विकरे करुमानदमानस जधज वा मरे ॥
रति गलिते ललिते कसमा निशि खिदि शिखिद कडा
मरे ६ सर सचने जचने समशेवर दारणा केदरे । माणि
रशाना वसना भरणानि शुभाशय वासय सेदरे ॥५॥
श्रीजयदेव वचसिजयदे सदये हृदये करु मेडने ॥
हरिचरण सरणा मृतहेत कलिकलषज्वर खिडने द

श्लोक ॥ रत्नयुक्तयोः पत्रे चित्रे कुरुष्व कपोलयो
र्ध्वयज्जने कोची मेव स्रजा कवरीभरे ॥ कलय व
लय श्रेणी पाणी पदे कुरु नृपरा विति निरादिनः प्री
तः पीतो वरोपि नया करोत ६४ प्रातर्नील निचोलम
व्यत सरः सेवीत पीतो श्रुके राधाया अकिते विलो
क्य हसिति स्वेरे सखी मेडले ॥ व्रीडाचे चल मेचले न

ग.म.
गी.

यनयो राथाय राथानने खैरे सैर सखिबुजोस्त जग
दा नेदाय नेदात्मजः ६५ पर्येकी कृत नाग नायक
फणा छेणी मणी नो गणी सेकोत प्रति विव सेवल
नया विशुद्धिभ प्रक्रियाम् । पादोभोरुह थारि वारि
यि सता मत्तणो दिहत्तः शतैः । कायवृह मिवाचरे
नुपविती भूतो हरिः पावक ६६ तिर्यक केद विलो

लमौलितरलोतेसस्यवेशोदर । जीतिस्थानकृताव
थानललनालदेणासेलतिताः प्रेमाकन्दलिताः
समयमथरेगयासर्वेदौसथा । सारेवोमथसू
दनस्यददत्तलेमेकदातोर्मयः । ६७ ॥ अष्टपदी ॥
सेचरदथरसथा मथरधति सार्वरित मोहनवेशे ।
चलितदृशेचलचेचलमौलिकपोल विलोलवसेते १

श-म-
गी

शसेहृदि मिह विहित विलासे । स्मरति मनोमम क
नपरिहासे चेद्रक चारु मयूर शिखिद्रक मेडल व
लपितकेशे । प्रचर प्रेदर यनरन रेजित मेडर म
दित सवेशे २ गोप कदेव तितेव वती मखचेवन
लेवितलोभे । वंश जीव मयूर थर पल्लव मलसि
तस्मित शोभे ३ विपल पुलक भजपल्लव वल्लयि

तवैल्लव सुवति सन्नसे । करचरणोरसिमणिग
णभूषण किरण विभिन्नतमिसे ४ जलटपट
लवल दिंड विनिंदक वेदन विडललाटे । पीनप
योथरपरसरमहेन निर्दय हृदय कपाटे ५ मणि
मय मकर मनोहर ऊंड मेरुत गंड मयारे । पीत
वसन मनगत मति मलज सुगहर वर परिवारे ६

श.म.
गी.

विशदकदेवतले मिलिते कलि कलष भये शम
येते । मामपि किमपि तरेण दत्तेण दृशा मनसा
रमयेते ७ श्रीजयदेव भणित मति सेंदर मोहन
मथुरिष रूपे । हरिचरण सारणे प्रति सेंप्रतिप्र
णवता मन रूपे । ८ ॥ श्लोक ॥ हस्त स्वस्त
विलास वेशमन्दज भूवल्लि महलवी वेंदोत्सा

रिह्योतवीलिते मतिस्वेदादी गेउस्थले । मासही
द्व विलजित स्मित स्रथा सुग्यानने कानने । गो
विंदे व्रज सेदरी गाण हते पश्यामि हृष्यामि च द्य
श्रेतमौहन मौलि च्छणीन चलत्सेदार विसेसनः
वाकर्षण दृष्टि हर्षण मरु मंत्रे करेगीदृशो । दृ
पदानव ह्यमान दिविष उर्वीर उःखापदो ॥

श.म.
गी

ये सः के स रि णो व्य णो ह्य न वो शे यो सि वे शी र वः
८५ य ज्ञो य र्व क ला स कौ श ल म न थ्या ने च य दै ल वे
य न शे गार वि वे क त त्त म पि य त्का ये ष ली ला यि ते
त त्स र्वे ज य दे व पे रि त्त क वेः कृ सै क ता ना त्म नः ॥ स
ने दः प रि शो थ ये त्त म थि यः श्री गी त गो वि द्य त्तः
५. सा धी मा धी क चि त्तान भ वन्ति भ वन्तः श क्ते र्क

केश सिद्धाक्षे दक्षेतिकेत्वा ममते मृत मसिद्धीरनी
रेरसस्ते । माकेदेकेद कोता थर पराशितले यच्छ
यच्छेति यावद्भावे श्रृंगार सारसुत मय जय देवस्य
विषग्वचासि ५१ श्री भोज देव प्रभवस्य रामादेवी
सुत श्री जय देवस्य । पयशरादि प्रियवर्गी केहे
श्री गीत गोविन्द कवित्तमस्तु । जय श्री विमलै

श-म
गी

महिन इव मेदाय कसमैः स्वये सिद्धेणा दिपिरा
मदा महिन इव । भजा पीड कीडा इत कवलया
पीडकरिणः । प्रकीर्ण हरिविड जयति भज दे
ये मरजितः ५३ ॥ इति शय मथ गीत गोवि
द परिच्छेदः समापनम् ॥ शुभेभूयान् ॥

कया सिद्धाते दत्तेतिकेत्वा ममते मृत मसि दीव
नीरे रसस्ते । माकेदे कंदकोताथर पराणितले ग
ह्य यच्छेति यावद्भावे शृंगार सारस्वत मयजय दे
वस्य विषयवचासि ५१ श्री भोज देव प्रभवस्य रा
मा देवी स्वत श्रीजय देवस्य । परा शरादि प्रिय व
री केहे श्री गीत गोविंद कवित्तमस्त । जय श्री

रा-दे
गी-

विद्यैर्मेहित इव मेदार ऊसमैः स्वये सिद्धेण दि
पिरणा मदा मदित इव । भजा पीड कीडहत ऊव
लया पीडकरिणाः । प्रकीर्णा स्मिन्विडर्जयति भज
देसे मरजितः ५३ ॥ इति राग देव शाखिण्य गी
त गोविंद परिवर्द्धः समापतम् ॥